

प्रधानमंत्री कार्यालय

# संसद के बजट सत्र से पूर्व प्रधानमंत्री द्वारा मीडिया को दिए गये वक्तव्य का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 29 JAN 2018 11:47AM by PIB Delhi

पिछले सत्र में सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बावजूद भी तीन तलाक, (Triple तलाक) संसद में हम पारित नहीं करवा पाए। मैं आशा करता हूं और मैं देश के सभी राजनीतिक दलों को विनम्र आग्रह करता हूं कि इस सत्र में, तीन तलाक महिलाओं के, विशेष करके मुस्लिम महिलाओं के हक की रक्षा करने वाले इस निर्णय को हम सब पारित करें और 2018 के नये वर्ष की एक उत्तम भेंट सौगात, हमारी मुस्लिम महिलाओं को हम दें।

बजट सत्र अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। पूरा विश्व जब भारत की अर्थव्यवस्था के प्रति बहुत ही आशावान है। भारत की राह, भारत की प्रगति पर विश्व की सभी Credit Rating Agencies हो, World Bank हो, IMF हो, बहुत ही सकारात्मक अपने opinion देती रही है। यह बजट देश की तेज की गति से आगे बढ़ रही अर्थव्यवस्था को एक नई ऊर्जा देने वाला, देश के सामान्य से सामान्य मानव की आशा-अपेक्षाओं को पूर्ण करने वाला बजट आएगा और बजट के बाद एक महीने भर भिन्न भिन्न कमेटियों में बजट की विषद चर्चा होती है। अनुभव यह है कि उन कमेटियों में दल से ऊपर देश होता है। सभी दल के लोग सत्तापक्ष के लोग भी कमियां उजागर करते हैं और विपक्ष के बंधू उसकी खूबियों को उजागर करते हैं। एक प्रकार को बहुत ही healthy environment होता है, healthy atmosphere होता है।

कल जब All Party meeting हुई तो मैंने आग्रह किया है कि हम इस महीने की जो चर्चा सत्र रहता है, कमिटियों के अंदर उसका भरपूर उपयोग करें, और बजट का सर्वाधिक लाभ देश के सामान्य मानव तक कैसे पहुंचे? दलित, पीड़ित, शोषित, वंचित को कैसे मिले? गांव गरीब को कैसे मिले? किसान मजदूर को कैसे मिले? इस पर हम व्यापक चिंतन करें, सकारात्मक सुझाव दें और roadmap बना करके हम आगे बढ़ें।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

\*\*\*

AKT/AK/Tara

(रिलीज़ आईडी: 1518018) आगंतुक पटल : 556



प्रधानमंत्री कार्यालय

# लोक सभा में प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 07 FEB 2018 9:00PM by PIB Delhi

आदरणीय अध्यक्ष महोदया जी, माननीय राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर उन्हें आभार व्यक्त करने के लिए मैं सदन में आपके बीच आभार प्रस्ताव का समर्थन करते हुए कुछ बातें जरूर कहना चाहूंगा। कल सदन में राष्ट्रपति जी के अभिभाषण के धन्यवाद प्रस्ताव पर कई मान्य सदस्यों ने अपने विचार व्यक्त किए। श्रीमान मल्लिका अर्जुन जी, श्रीमान मोहम्मद सलीम जी, श्रीमान विनोद कुमार जी, श्रीमान नरसिम्हन धोटा जी, श्री तारिक अनवर जी, श्री प्रेम सिंह जी, श्री अनवर रजा जी, जयप्रकाश नारायण यादव जी, कल्याण बैनर्जी, श्री पी. वेणु गोपाल, आनंदराव अडसुल जी, आर. के. भारती मोहन जी, करीब 34 मान्य सदस्यों ने अपने विचार व्यक्त किए। विस्तार से चर्चा हुई। किसी ने पक्ष में कहा, किसी ने विपक्ष में कहा। लेकिन यह सार्थक चर्चा इस सदन में हुई और राष्ट्रपति जी का भाषण किसी दल का नहीं होता है। देश की आशा-आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति का और उस दिशा में हो रहे कार्य का एक आलेख होता है। और उस दृष्टि से राष्ट्रपति जी के भाषण का सम्मान होना चाहिए। सिर्फ विरोध के खातिर विरोध करना कितना उचित है।

सभापति महोदया जी, हमारे देश में राज्यों की रचना आदरणीय अटल बिहार वाजपेयी जी ने भी की थी। तीन नये राज्यों का निर्माण हुआ था और उन तीन राज्यों के निर्माण में चाहे उत्तर प्रदेश में से उत्तराखंड बना हो, मध्य प्रदेश में से छत्तीसगढ़ बना हो, बिहार में से झारखंड बना हो, लेकिन उस सरकार की दीर्घ दृष्टि थी कि कोई भी समस्या के बिना तीनों राज्य अलग होते ही अगर जो भी बंटवारा करना था तो बंटवारा, अफसरों के तबादले करने थे तो अफसरों के तबादले सारी चीजें smoothly हुई। नेतृत्व अगर दीर्घ दृष्टया हो, राजनीतिक स्वार्थ की हड़बड़ाहट में निर्णय नहीं होते हो, तो कितने स्वस्थ निर्णय होते हैं। इसका उदाहरण अटल बिहारी वाजपेयी जी ने जो तीन राज्यों का निर्माण किया था, आज देश अनुभव कर रहा है। आपके चरित्र में हैं जब भारत का विभाजन किया आपने, देश के टुकड़े किए और जो जहर बोया। आज आजादी के 70 साल के बाद एक दिन ऐसा नहीं जाता है कि आपके उस पाप की सजा सवा सौ करोड़ हिंदुस्तानी न भुगत रहे हो।

आपने देश के टुकड़े किए वो भी उस तरीके से किए। आपने चुनाव को ध्यान में रखते हुए हड़बड़ी में संसद के दरवाजे बंद करके सदन ऑर्डर में नहीं था, तब भी आंध्र के लोगों की भावनाओं का आदर किए बिना तेलंगाना बनाने के पक्ष में हम भी थे। तेलंगाना आगे बढ़े उसके पक्ष में आज भी हम हैं। लेकिन आंध्र के साथ उस दिन आपने जो बीज बोये, आपने जो चुनाव के लिए हड़बड़ी में किया। यह उसी का नतीजा है कि आज चार साल के बाद भी समस्याएं सुलगती रहती हैं और इसलिए आपको यह प्रकार की चीजें शोभा नहीं देती।

सभापति महोदया जी, कल मैं कांग्रेस पार्टी के नेता श्रीमान खड़गे जी का भाषण सुन रहा था। मैं यह समझ नहीं पा रहा था कि वे ट्रेजरी बेंच को संबोधित कर रहे थे, कर्नाटक के लोगों को संबोधित कर रहे थे कि अपने ही दल के नीति निर्धारकों को खुश करने का प्रयास कर रहे थे। और जब उन्होंने कल बशीर बद्र की शायरी से शुरू किया। खड़गे जी ने बशीर बद्र जी की शायरी सुनाई। और मैं आशा करता हूं कि उन्होंने जो शायरी सुनाई है, वो कर्नाटक के मुख्यमंत्री महोदय ने जरूरी सुनी होगी। कल उस शायरी में उन्होंने कहा कि -

‘दुश्मनी जमकर करो, लेकिन यह गुंजाइश रहे

जब कभी हम दोस्त हो जाएं, तो शर्मिदा न हो’

मैं जरूरत मानता हूं कि कर्नाटक के मुख्यमंत्री जी ने आपकी यह गुहार सुन ली होगी, लेकिन श्रीमान खड़गे जी जिस बशीर बद्र की शायरी का आपने जिक्र किया, अच्छा होता उस शायरी में जो शब्द आप बोल रहे हैं उसके बिल्कुल पहले वाली लाइन उसको भी अगर याद कर लेते तो शायद इस देश को यह पता जरूर चलता कि आप कहां खड़े हैं। उसी शायरी में बशीर बद्र जी ने आगे कहा है -

‘जी चाहता है सच बोले, जी बहुत चाहता है सच बोले,

क्या करे हौसला नहीं होता।’

मैं नहीं जानता हूं कि कर्नाटक के चुनाव के बाद खड़गे जी उस सही जगह पर होंगे कि नहीं होंगे और इसलिए एक प्रकार से यह farewell speech भी उनकी हो सकती है। और इसलिए आमतौर पर सदन में जब पहली बार कोई सदस्य बोलते हैं तो हर कोई सम्मान से और उसी प्रकार से जो farewell की speech होती है, वो भी करीब-करीब सम्मान से देखी जाती है। अच्छा होता कल कुछ माननीय सदस्यों ने संयम बरता होता और आदरणीय खड़गे जी की बात को उसी सम्मान के साथ सुना होता, तो अच्छा होता। लोकतंत्र के लिए बहुत आवश्यक है। विरोध करने का हक है, लेकिन सदन को मान में लेने का हक नहीं है।

कल अध्यक्ष महोदया, मैं देख रहा हूं कि जब भी हमारे विपक्ष में कुछ लोग हमारी किसी बात की आलोचना करने जाते हैं, तो तथ्य तो कम होते हैं। लेकिन हमारे जमाने में ऐसा था, हमारे जमाने में ऐसा किया था, हम यह करते थे ज्यादातर उसी कैसेट को बजाया जाता है। लेकिन यह न भूलें कि भारत आजाद हुआ, उसके बाद भी जो देश आजाद हुए वो हमसे भी तेज गति से काफी आगे बढ़ चुके हैं। हम नहीं बढ़ पाए मानना पड़ेगा और आपने मां भारती के टुकड़े कर दिए उसके बावजूद भी यह देश आपके साथ रहा था। आप उस जमाने में देश पर राज कर रहे थे। प्रारंभिक तीन-चार दशक विपक्ष का एकमात्र से नाममात्र का विपक्ष था। वो समय था, जब मीडिया का व्याप भी बहुत कम था और जो था वो भी ज्यादातर देश का भला होगा इस आशा से शासन के साथ चलता था। रेडियो पूरी तरह आप ही के गीत गाता था और कोई स्वर वहां सुनाई नहीं देता था। और बाद में जब टीवी आया तो वो टीवी भी आप ही को पूरी तरह समर्पित था। उस समय न्यायपालिका में भी judiciary की top position पर भी नियुक्तियां कांग्रेस पार्टी करती थी। पार्टी के द्वारा तय होता था यानि इतनी luxury आपको। उस समय कोर्ट में न कोई पीआईएल होता था न कोई NGO की ऐसी भरमार होती थी। आप जिन विचारों से पले-बढ़े हो, वैसा ही माहौल उस समय देश में आपको उपलब्ध था। विरोध का नामो-निशान नहीं था। पंचायत से पार्लियामेंट तक आप ही का झंडा फहर रहा था, लेकिन आपने पूरा समय एक परिवार के गीतगाने में खपा दिया। देश के इतिहास को भुला करके एक ही परिवार को देश याद रखें, सारी शक्ति उसी में लगाई। उस समय देश का जज्बा आजादी के बाद के दिन थे। देश को आगे ले जाने का जज्बा था, आपने कुछ जिम्मेदारी के साथ काम किया होता, तो एक देश की जनता में सामर्थ्य था देश को कहां से कहां तक पहुंचा देते। लेकिन आप अपनी ही धुन बजाते रहे। और यह मानना पड़ेगा कि आपने सही दिशा रखी होती, सही नीतियां बनाई होती, अगर नियत साफ होती, तो यह देश आज जहां है, उससे कई गुना आगे और अच्छा होता। इसको इंकार नहीं कर सकते। यह दुर्भाग्य रहा है देश का कि कांग्रेस पार्टी के नेताओं को यही लगता है कि भारत नाम के देश का जन्म 15 अगस्त, 1947 को हुआ। जैसे इसके पहले देश था ही नहीं। और कल मैं हैरान था, इसको मैं अहंकार कहूं, यानसमझी कहूं, या

वर्षा ऋतु के समय अपनी कुर्सी बचाने का प्रयास कहूं। जब यह कहा गया कि देश को नेहरू ने लोकतंत्र दिया, देश को कांग्रेस ने लोकतंत्र दिया। अरे खड़गे साहब, कुछ तो कम करो। जरा मैं पूछना चाहता हूं आप लोकतंत्र की बात करते हैं। आपको पता होगा यह हमारा देश, जब आप जो लोकतंत्र की बात करते हैं, हमारा देश जब लिच्छवी साम्राज्य था, जब बुध परंपराएं थी, तब भी हमारे देश में लोकतंत्र की गूंज थी। यह कांग्रेस और नेहरू जी ने लोकतंत्र नहीं दिया।

बौद्ध संघ एक ऐसी व्यवस्था थी जो चर्चा, विचार विमर्श और वोटिंग के आधार पर निर्णय करने की प्रक्रिया चलाता था और श्रीमान खड़गे जी, आप तो कर्नाटक से आते हो कम से कम एक परिवार की भक्ति करके कर्नाटक के चुनाव के बाद शायद आपके यहां बैठने की जगह बची रहे, लेकिन कम से कम जगत गुरु बशवेश्वर जी का तो अपमान मत करो। आपको पता होना चाहिए, आप कर्नाटक से आते हो कि जगत गुरु बशवेश्वर थे, जिन्होंने उस जमाने में अनुभव मंडपम नाम की व्यवस्था की, 12वीं शताब्दी में, और गांव के सारे निर्णय लोकतांत्रिक तरीके से होता था। और इतना ही नहीं women empowerment का काम हुआ था उस सदन के, उस सभा के अंदर महिलाओं का होना अनिवार्य हुआ करता था। यह जगत गुरु बशवेश्वर जी के कालखंड में लोकतंत्र को प्रस्तावित करने का काम 12वीं शताब्दी में इस देश हुआ था। लोकतंत्र हमारी रगों में हैं, हमारी परंपरा में है। और बिहार के अंदर इतिहास गवाह है लिच्छवी साम्राज्य के समय इस प्रकार से हमारे यहां, अगर हम प्राचीन इतिहास की तरह गौर करें, तो हमारे यहां गणराज्य की व्यवस्थाएं हुआ करती थी, ढाई हजार साल पहले, यह भी लोकतंत्र की परंपरा थी। सहमति और असहमति को हमारे यहां मान्यता थी। आप लोकतंत्र की बात करते हो, श्रीमान मनमोहन जी की सरकार में मंत्री रहे हुए और आप ही के पार्टी के नेता उन्होंने अभी-अभी जब आपकी पार्टी के भीतर चुनाव चल रहा था, तो उन्होंने मीडिया को क्या कहा था। उन्होंने कहा था जहांगीर की जगह पर शाहजहां आए, शाहजहां की जगह औरंगजेब आए। क्या वहां चुनाव हुआ था क्या? तो हमारे यहां भी आ गए। आप लोकतंत्र की बात करते हो। आप लोकतंत्र की चर्चा करते हो। मैं जरा पूछना चाहता हूं, वो कौन सा लोकतंत्र की चर्चा करते हैं, जब आपके पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमान राजीव गांधी हैदराबाद के एयरपोर्ट पर उतरते हैं। वहां पर आप ही के पार्टी के चुने हुए मुख्यमंत्री, schedule caste के मुख्यमंत्री एयरपोर्ट पर receive करने आए थे और लोकतंत्र में विश्वास की बातें करने वाले लोग जिस नेहरू जी के नाम पर आप लोकतंत्र की सारी परंपरा समर्पित कर रहे हो। श्रीमान राजीव गांधी ने हैदराबाद एयरपोर्ट पर उतर करके एक दलित मुख्यमंत्री उनको खुलेआम अपमानित किया था। एक चुने हुए जनप्रतिनिधि मुख्यमंत्री टी अंजैया का अपमान किया आप लोकतंत्र की बातें करते हो, अरे आप लोकतंत्र की चर्चा करते हो तब सवाल यह उठता है और यह तेलगूदेशम पार्टी यह एंटी रामाराव उस अपमान की आग में से पैदा हुए थे। टी अंजैया का अपमान हुआ उनका सम्मान करने के लिए रामाराव को अपना फिल्म क्षेत्र छोड़ करके आंध्र की जनता की सेवा के लिए मैदान में आना पड़ा।

आप लोकतंत्र की बात समझा रहे हो। इस देश में 90 बार, 90 से अधिक बार धारा-356 का दुरुपयोग करते हुए राज्य सरकारों को उन राज्यों में उभरती हुई पार्टियों को आपने उखाड़ के फेंक दिया। आपने पंजाब में अकाली दल के साथ क्या किया? आपने तमिलनाडु में क्या किया? आपने केरल में क्या किया? इस देश के लोकतंत्र को आपने पनपने नहीं दिया। आप अपने परिवार के लोकतंत्र को लोकतंत्र मानते हो। और देश को आप गुमराह कर रहे हो। इतना ही नहीं कांग्रेस पार्टी का लोकतंत्र, जब आत्मा की आवाज़ उठती है, तो उनका लोकतंत्र दबोच जाता है। आप जानते हैं कांग्रेस पार्टी ने राष्ट्रपति के उम्मीदवार के रूप में नीलम संजीव रेड्डी को पसंद किया था। और रातो-रात उनका पीठ पर छुरा भोंक दिया गया। अतिकृत उम्मीदवार का पराजित कर दिया गया। और यह भी तो देखिए इतफाक से वे भी आंध्र से आते थे। टी अंजैया के साथ किया आपने संजीव रेड्डी के साथ किया। आप लोकतंत्र की बात बताते हो? इतना ही नहीं अभी का डॉक्टर मनमोहन सिंह जी इस देश के प्रधानमंत्री कैबिनेट का निर्णय किया लोकतंत्र की महत्वपूर्ण संस्था संविधान के द्वारा बनी हुई संस्था आप ही की पार्टी की सरकार और

आपकी पार्टी के एक पदाधिकारी पत्रकार वार्ता बुला करके कैबिनेट के निर्णय को प्रेस के सामने टुकड़े कर दे। आपके मुंह में लोकतंत्र शोभा नहीं देता है। और इसलिए कृपा करके आप हमें लोकतंत्र के पाठ मत पढ़ाइये।

मैं जरा एक और इतिहास की एक बात आज बता रहा हूं। क्या सत्य नहीं है देश में कांग्रेस में नेतृत्व करने के लिए चुनाव हुआ। 15 कांग्रेस कमेटियां, उसमें से 12 कांग्रेस कमेटियों ने सरदार वल्लभ भाई पटेल को चुना था। तीन लोगों ने नोटा किया था। किसी को भी वोट नहीं देने का निर्णय किया था। उसके बावजूद नेतृत्व सरदार वल्लभ भाई पटेल को नहीं दिया गया। वो कौन सा लोकतंत्र था? पंडित नेहरू को बिठा दिया गया। अगर देश के पहले प्रधानमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल होते, तो मेरा कश्मीर का यह हिस्सा आज पाकिस्तान के पास न होता।

अभी दिसंबर में क्या कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष का चुनाव था या ताजपोशी थी। आप ही के पार्टी के नौजवान ने आवाज़ उठाई, वो अपना उम्मीदवारी पत्र भरना चाहता था। आपने उसको भी रोक दिया। आप लोकतंत्र की बातें करते हो। मैं जानता हूं यह आवाज़ दबाने के लिए इतनी कोशिश नाकाम रहने वाली है। सुनने की हिम्मत चाहिए, और इसलिए अध्यक्ष महोदया, हमारी सरकार की विशेषता है ऐसे एक वर्क कल्चर को लाए, जिस वर्क कल्चर में सिर्फ घोषणाएं करके अखबार की सुर्खियों में छा जाना, सिर्फ योजनाएं घोषित करके जनता के आंख में धूल झाँक देना, यह हमारा कल्चर नहीं है। हम उन चीजों को हाथ लगाते हैं जिसको पूरा करने का प्रयास हो। और जो अच्छी चीजें हैं वो किसी भी सरकार की, किसी की भी क्यों न हो अगर वो अटकी है, देश का नुकसान हो रहा है, तो उसको ठीक-ठाक करके पूरा करने का प्रयास करते हैं, क्योंकि लोकतंत्र में सरकारें आती-जाती हैं, देश बना रहता है और उस सिद्धांत को हम मानने वाले व्यक्ति हैं। क्या यह सत्य नहीं है। यही मुलाजिम, यही फाइलें, यही कार्यशैली और क्या कारण था कि पिछली सरकार में हर रोज 11 किलोमीटर नेशनल हाईवे बनते थे। आज एक दिन में 22 किलोमीटर नेशनल हाईवे बने हैं। रोड आप भी बनाते हैं, रोड हम भी बनाते हैं। पिछली सरकार के आखिरी तीन सालों में 80 हजार किलोमीटर सड़कें बनीं। हमारी सरकार के तीन साल में एक लाख 20 हजार किलोमीटर सड़कें बनीं। पिछली सरकार के आखिरी तीन वर्षों में लगभग 1100 किलोमीटर नई रेल लाइन का निर्माण हुआ। सरकार के इन तीन वर्षों में 2100 किलोमीटर हुआ। पिछली सरकार के आखिरी तीन वर्षों में ढाई हजार किलोमीटर रेल लाइन का बिजलीकरण हुआ। इस सरकार के तीन सालों में चार हजार तीन सौ किलोमीटर से ज्यादा काम हुआ। 2011 के बाद पिछली सरकार 2014 तक आप फिर कहेंगे, यह तो योजना हमारी थी, यह तो कल्पना हमारी थी, इसकी क्रेडिट तो हमारी है, यह गीत गाएंगे, सच्चाई क्या है? ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क, आपके कार्य करने के तरीके क्या थे? जब तक रिश्तेदारों का मेल न बैठे या अपनों का मेल न बैठे, गाड़ी आगे चलती नहीं थी। 2011 के बाद से 2014 तक आपने सिर्फ 59 पंचायतों में ऑप्टिकल फाइबर पहुंचाया।

2011 से 2014 तीन साल। हमने आने के बाद इतने कम समय में एक लाख से अधिक पंचायतों में ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क पहुंचा दिया। कहां तीन साल में 60 से भी कम गांव और कहां तीन में एक लाख से भी ज्यादा गांव, कोई हिसाब ही नहीं है जी। और इसलिए पिछली सरकार शहरी आवास योजना 939 शहरों में लागू किए थे। आज प्रधानमंत्री आवास योजना urban 4320 शहरों में लागू की थी। आप एक हजार से भी कम हम 4000 से भी ज्यादा। पिछली सरकार के आखिरी तीन वर्षों में कुल 12 हजार मेगावाट की renewable energy की नई क्षमता जोड़ी गई। इस सरकार के तीन सालों में 22 हजार मेगावाट से भी ज्यादा जोड़ी गई। Shipping Industry कार्गो हैंडलिंग में आपके समय negative growth था। इस सरकार ने तीन साल में 11 प्रतिशत से ज्यादा growth करके दिखाया है। अगर आप जमीन से जुड़े होते, तो शायद आपकी हालात न होती। मुझे अच्छा लगा हमारे खड़गे जी ने, दो चीजें एक तो रेलवे और दूसरा कर्नाटक और खड़गे जी का एकदम सीना फूल जाता है। आपने बीदर कलबुर्गी रेल लाइन का जिक्र किया। जरा देश को इस सच्चाई का पता होना चाहिए। यह बात कांग्रेस के मुंह से कभी किसी ने सुनी नहीं होगी, कभी नहीं बोले होंगे। उद्घाटन समारोह में भी

नहीं बोले होंगे, शिलान्यास में भी नहीं बोले होंगे। सत्य स्वीकार करिये कि यह बीदर कलबुर्गी 110 किलोमीटर की नई रेल लाइन का प्रोजेक्ट अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में मंजूर हुआ था। और 2013 तक आपकी सरकार रही, आप स्वयं रेल मंत्री रहे यह आप ही के parliamentary Constituency का इलाका है और उसके बावजूद भी इतने सालों में, अटल जी की सरकार के बाद कितने साल हुए अंदाज लगाइये सिर्फ 37 किलोमीटर का काम हुआ, 37 किलोमीटर। और वो काम भी तब हुआ जब येदियुरप्पा जी मुख्यमंत्री थे और उन्होंने initiative लिया। उन्होंने भारत सरकार ने जो मांगा देने के लिए सहमति दे दी। तब जाकर आपकी सरकार ने अटल जी के सपने को आगे बढ़ाने का काम चालू किया। और वो भी जब चुनाव आया तो आपको लगा कि यह रेल चल पड़े तो अच्छा होगा।

110 किलोमीटर होनी थी साढ़े तीस किलोमीटर के टुकड़े पर जा करके झंडी फहरा करके आ गए। और हमने आ करके इतने कम समय में 72 किलोमीटर का जो बाकी काम था पूरा किया। और यह हमने नहीं सोचा कि विपक्ष के नेता की parliamentary Constituency है इसको अभी गड्डे में डालो देखा जाएगा। ऐसा पाप हम नहीं करते। आपका इलाका था, लेकिन काम देश का था। हमने देश का काम मान करके उसको पूरा किया। और उस पूरी योजना का लोकार्पण मैंने किया तो भी आपको दर्द हो रहा है। इस दर्द की दवा शायद देश की जनता ने बहुत पहले कर दी है।

अध्यक्ष महोदया, दूसरी एक चर्चा कर रहे हैं बाइमेर की रिफाइनरी की। चुनाव प्राप्त करने के लिए, चुनाव के पहले पत्थर पर नाम जड़ जाएगा तो गाड़ी चल जाएगी। आपने बाइमेर रिफाइनरी पर जाकर पत्थर जड़ लिए, नाम लिखवा दिया, लेकिन जब हम आ करके कागजात देखे तो जो वो शिलान्यास हुआ था रिफाइनरी का वो सारा का सारा कागज पर था जमीन पर न मंजूरी थी, न जमीन थी, न भारत सरकार के साथ कोई Final Agreement था। और चुनाव को ध्यान में रखते हुए आपने वहां भी पत्थर जड़ दिया। आपकी गलतियों को ठीक करते उस योजना को सही स्वरूप देने में भारत सरकार को, राजस्थान सरकार को इतनी माथापच्ची करनी पड़ी, तब बड़ी मुश्किल से उसको निकाल पाए और आज उस काम को प्रारंभ कर दिया है।

असम में एक धोला सादिया ब्रिज, यह धोला सादिया ब्रिज जब हमने उद्घाटन किया तो जरा कुछ लोगों को तकलीफ हो गई और कह दिया यह तो हमारा था बड़ा आसान है। यह कभी नहीं बोले हैं जब उस ब्रिज का काम आगे बढ़ रहा था, कभी सदन में सवाल उठे हैं, कभी यह कहने की ईमानदारी नहीं दिखाई कि यह काम भी अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में निर्मित हुआ था और वो भी हमारे बीजेपी के एक विधायक उन्होंने विस्तार से अध्ययन करके मांग की थी और अटल जी ने उस मांग को माना था और उसमें से यह बना था। और 2014 में हमारी सरकार बनने के बाद नॉर्थ ईस्ट उत्तर पर्व के इलाकों को हमने प्राथमिकता दी और उसको तेज गति से आगे बढ़ाने का काम हमने किया और तब जा करके वो ब्रिज बना। इतना ही नहीं मैं गर्व से कह सकता हूं यह सरकार है जो देश में आज सबसे लंबी सुरंग, सबसे लंबी गैस पाइप लाइन, सबसे लंबा समुद्र के अंदर ब्रिज, सबसे तेज ट्रेन यह सारे निर्णय यही सरकार कर सकती है और समय सीमा में आगे बढ़ा रही है। इसी कालखंड में 104 सेटेलाइट छोड़ने का विक्रम भी इसी कालखंड में होता है।

इस बात का इन्कार नहीं किया जा सकता जो राष्ट्रपति जी ने अपने अभिभाषण में उल्लेखन किया और मैं कहना चाहूंगा लोकतंत्र कैसे होता है। शासन में रहे हुए हरेक का सम्मान कैसा होता है। लालकिले पर से भाषण निकाल दीजिए। आजादी के सभी कांग्रेस के नेताओं के लालकिले से भाषण निकाल दीजिए एक भाषण में किसी ने यह कहा हो कि देश में जो प्रगति हो रही है, उसमें सभी सरकारों का योगदान है। भूतपूर्व सरकारों का योगदान है, ऐसा एक वाक्य लालकिले पर से कांग्रेस के नेताओं ने बोला हो, तो जरा इतिहास खोल करके ले आइये। यह नरेंद्र मोदी लालकिले पर से कहता है कि देश आज जहां है पुरानी सभी सरकारों का भी योगदान है, राज्य सरकारों का भी योगदान है और देशवासियों का योगदान है। खुलेआम स्वीकार करने की हमारी हिम्मत है और यह हमारे चरित्र में हैं।



मैं आज बताना चाहता हूँ गुजरात में जब मुख्यमंत्री था, तो उस मुख्यमंत्री के कालखंड में गुजरात की Golden Jubilee का Year था। हमने Golden Jubilee Year मनाने में जो कार्यक्रम किए एक कार्यक्रम क्या किया, जितने भी राज्यपाल श्री के भाषण थे governor के, गवर्नर के भाषण क्या होते हैं, जैसे राष्ट्रपति का भाषण उस सरकार की गतिविधियों का उल्लेख करता है। गवर्नर का भाषण उस काल के राज्य सरकार के किए गए कामों का बयान करता है। सरकारें कांग्रेस की रही थी, गुजरात बनने के बाद। लेकिन हमने गुजरात बना तब से लेकर 50 साल तक की यात्रा में जितने भी गवर्नरों के भाषण थे, जिसमें सभी सरकारों के काम का ब्योरा था, उसका ग्रंथ प्रसिद्ध किया और उसको archives में रखने का काम किया। लोकतंत्र इसको कहते हैं। आप मेहरबानी करके, हर कुछ आप ही ने किया है, आपके यह परिवार ने किया है। इस मानसिकता के कारण आज वहां जाकर बैठने की नौबत आई है आपको। आपने देश को स्वीकार नहीं किया है और इसलिए आज यह कारण है कि दोगुनी रफ्तार से सड़के बन रही है। रेलवे लाइनें तेज गति से आगे बढ़ रही है, पोर्ट डेवलपमेंट हो रहे हैं, गैस पाइपलाइन बिछ रही है, बंद पड़े fertilizer plant उसको खोलने का काम चल रहा है, करोड़ों घरों में शौचालय बन रहे हैं और रोजगार के नये अवसर उपलब्ध हो रहे हैं।

मैं जरा कांग्रेस के मित्रों से पूछना चाहता हूँ, रोजगारी और बेरोजगारी की आलोचना करने वाले उनसे मैं जरा पूछना चाहता हूँ। आप जब बेरोजगारी का आंकड़ा देते हैं, तो आप भी जानते हैं, देश भी जानता है, मैं भी जानता है कि आप बेरोजगारी का आंकड़ा पूरे देश का देते हैं। अगर बेरोजगारी का आंकड़ा पूरे देश का है, तो रोजगारी का आंकड़ा भी पूरे देश का बनता है। अब आपको हमारी बात पर भरोसा नहीं होगा, मैं जरा कुछ कहना चाहता हूँ और आप रिकॉर्ड के पास रहिए, पश्चिम बंगाल की सरकार, कर्नाटक की सरकार, ओडिशा की सरकार और केरल की सरकार हम तो हैं नहीं वहां, न कोई एनडीए है। इन चार सरकारों ने स्वयं ने जो घोषित किया है, उस हिसाब से पिछले तीन-चार वर्ष में इन चार सरकारों का दावा है कि वहां करीब-करीब एक करोड़ लोगों को रोजगार मिला है। क्या आप उनको भी इंकार करोगे क्या? क्या आप उस रोजगार को रोजगार नहीं मानोगे क्या? बेरोजगारी देश की और पूरे देश में रोजगारी का काम, और मैं इसमें देश के आर्थिक रूप से समृद्ध राज्यों की चर्चा नहीं कर रहा, भाजपा की सरकारों की चर्चा नहीं कर रहा हूँ, एनडीए की सरकारों की चर्चा नहीं कर रहा हूँ, मैं उन सरकारों की चर्चा कर रहा हूँ जो सरकार में आपके लोग बैठे हैं और रोजगार के claim वो कर रहे हैं। या तो आप नकार कर दीजिए कि आपकी कर्नाटक सरकार रोजगार के जो आंकड़े बोल रही है, झूठे बोल रही है। बोलो।

और इसलिए देश को गुमराह करने की कोशिश मत कीजिए और ऐसे देश के सभी राज्यों के रोजगार भारत सरकार ने जो प्रयास किया है उसकी योजनाएं और आप जानते हैं एक साल में 70 लाख नये ईपीएफ में नाम रजिस्टर हुए हैं और यह 18 से 25 साल के नौजवान हैं बेटे-बेटियां हैं और इनका नाम जुड़ा है। क्या यह रोजगार नहीं है क्या? इतना ही नहीं जो कोई डॉक्टर बने, कोई इंजीनियर बने, कोई lawyer बने, कोई chartered accountant बने। इन्होंने अपने कारोबार प्रारंभ किए। अपनी कंपनियों में लोगों को काम दिया। खुद का रोजगार बढ़ाया। आप इसको गिनने को तैयार नहीं हैं। और आप जानते हैं, भलीभांति जानते हैं formal sector में सिर्फ 10 प्रतिशत रोजगार होता है, informal sector में 90 percent होता है। और आज informal को भी formal में लाने के लिए हमने कई ऐसे incentive और कई योजनाएं बनाने की दिशा में सफलतापूर्वक प्रयास किया है। इतना ही नहीं, आज देश का मध्यम वर्गीय परिवार का नौजवान वो नौकरी की भीख मांगने वालों में से नहीं है, वो सम्मान से जीना चाहता है, वो अपने बलबूते पर जीना चाहता है। मैंने ऐसे कई आईएसएस अफसर देखे हैं कभी मैं पूछता हूँ कि आपकी संतान क्या करती है? ज्यादातर मैं सोचता हूँ कि शायद वो भी बाबू बनेंगे। लेकिन आजकल वो मुझे कह रहे हैं कि सर जमाना बदल गया है। हमारे पिताजी के सामने हम थे तो हम सरकारी नौकरी खोजते-खोजते यहां पहुंच गए। आज हमारे बच्चों को हम कहते हैं कि बेटा यहां आ जाओ, वो मना करता है और वो कहता है कि मैं तो स्टार्टअप चालू करूंगा। वो विदेश से



पढ़ करके आया है, बोले मैं स्टार्टअप चालू करूंगा। सब दूर देश के नौजवानों में यह aspiration है और भारत के नेतृत्व में कोई भी दल हो देश के मध्यमवर्गीय तेज और तरार जो नौजवान है, उनके aspiration को बल देना चाहिए, उनको निराश करने का काम नहीं करना चाहिए और प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, skill development योजना, entrepreneurship training की योजना या सारी बातें देश के मध्यम वर्ग के ऊर्जावान नौजवानों को उसे aspiration को बल देने के लिए हम प्रयास कर रहे हैं और उसी का परिणाम है कि प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के तहत 10 करोड़ से ज्यादा Loan की स्वीकृति हुई है। यह आंकड़ा कम नहीं है और अभी तक यह 10 करोड़ लोन स्वीकृति में कहीं किसी की अटकी हुई, कोई बीच में दलाल आया, उसकी कोई शिकायत नहीं आई है। और यह भी तो इस सरकार के वर्ग कल्चर का परिणाम है। यह भी उस कल्चर का परिणाम है, कोई बिचौलिया नहीं आया। और उसका कारण था कि हमने जो प्रोडक्ट बनाई है, नीति नियम बनाए हैं, उसी का वो परिणाम था कि उसको बिना कोई गारंटी बैंक में जा करके उसको धन मिल सकता है। और यह 10 करोड़ लोन स्वीकृत हुई है, उसमें चार लाख करोड़ रुपये से ज्यादा पैसा दिया गया है। इतना ही नहीं यह लोन प्राप्त करने वाले लोग हैं उसमें तीन करोड़ लोग बिल्कुल नये उद्यमी हैं, जिनको कभी ऐसा अवसर नहीं आया जीवन में ऐसे लोग हैं क्या यह भारत की रोजगारी बढ़ाने का काम नहीं हो रहा है, लेकिन आपने आंखें बंद करके रखी है। और इसलिए आप सब अपने गीत गाने से ऊपर आ नहीं पा रहे हैं, और यह मानसिकता आपको वहीं रहने देगी। और यह भी अटल जी ने कहा है वो ही सच्चाई है कि आप छोटे मन से कोई बड़ा नहीं होता, अटल जी ने कहा कि 'छोटे मन से कोई बड़ा नहीं होता और टूटे मन से कोई खड़ा नहीं होता' और इसलिए आप वहीं रह जाओगे, वहीं पर गुजारा करना है आपको।

मैं जरा पूछना चाहता हूं यह सब हमारे जमाने के, हमारे जमाने के गीत गाते रहते हैं। 80 के दशक में हमारे देश में यह गूंज सुनाई दे रही थी, 21वीं सदी आ रही है, 21वीं सदी आ रही, 21वीं सदी आ रही है। और उस समय यह कांग्रेस के नेता हर किसी को 21वीं सदी का एक पर्चा दिखाते थे। नौजवान नेता थे, नये-नये आए थे, अपने नाना से भी ज्यादा सीटें जीत करके आए थे और देश की जनता 21वीं सदी, 21वीं सदी.. और मैंने उस समय एक कार्टून देखा था, बड़ा ही interesting cartoon था कि रेल के पास प्लेटफॉर्म पर एक नौजवान खड़ा है और सामने से ट्रेन आ रही है। ट्रेन पर लिखा था 21वीं शताब्दी और यह नौजवान उस तरफ दौड़ रहा है। एक बुजुर्ग ने कहा खड़े रहो वो तो आने ही वाली है, तुम्हें कुछ करने की जरूरत नहीं है। 80 के दशक में 21वीं शताब्दी के सपने दिखाए जाते थे। सारे देर 21वीं सदी के भाषण सुनाए जा रहे थे और 21वीं सदी बात करने वाली सरकार इस देश में Aviation Policy तक नहीं ले पाई। अगर 21वीं सदी में Aviation Policy नहीं होगी, वो कैसी 21वीं सदी का आपने सोचा था? बेलगाड़ी वाली, यही आप चल रहे हैं।

भाइयों-बहनों, अध्यक्ष महोदया, एक Aviation Policy हमने बनाई और आज छोटे-छोटे शहरों में जो छोटी-छोटी हवाई पट्टियां पड़ी हुई थी, इसका हमने उपयोग किया और 16 नई हवाई पट्टियां जहां जहाज आना-जाना शुरू हो गया। 80 से ज्यादा Aviation के लिए संभावनाएं पड़ी हुई हैं, उस पर हम कार्य कर रहे हैं। tier-2, tier-3 इन शहरों में हवाई जहाज उड़ने वाले हैं। और आज देश में यह सुन करके यह तकलीफ होगी, आज देश में करीब-करीब साढ़े चार सौ जहाज, हवाई जहाज operational हैं। करीब-करीब साढ़े चार सौ। आपको जान करके खुशी होगी कि हमारे इस initiative का परिणाम है कि इस वर्ष नौ सौ से ज्यादा नये हवाई जहाज खरीदने के order हिन्दुस्तान से गए हैं और इसलिए मैं मानता हूं और यह सफलता इसलिए नहीं मिली है कि सिर्फ हम निर्णय करते हैं। हम Technology का भरपूर उपयोग करते हैं, हम monitoring करते हैं। और रोड़ के काम को भी और रेल के काम को भी हम ड्रोन से देख रहे हैं। हम सेटेलाइट टेक्नोलॉजी के द्वारा, हम tagging कर रहे हैं। इतना ही नहीं अगर टॉयलेट बने तो mobile phone पर उसकी तस्वीर tag की जाती है। और इस प्रकार से हर चीज

को सेटेलाइट की टेक्नोलॉजी का उपयोग करते हुए आगे बढ़ाने का हमने काम किया है और उसके कारण मॉनिटरिंग के कारण गति भी आई है। monitoring के कारण transparency को भी ताकत मिली है।

मैं हैरान हूँ अगर आधार मुझे बराबर याद है, जब हम चुनाव जीत करके आए। आप ही की तरफ से आशंकाएं पैदा की गई थी कि मोदी आधार को खत्म कर देगा। यह हमारी योजना है मोदी पटक देगा, मोदी आधार को आने नहीं देगा। आप मान करके चले थे और इसलिए आपने मोदी पर हमला बुलाने के लिए आधार का इसलिए उपयोग किया था कि मोदी लाएगा नहीं। लेकिन जब मोदी ने उसको वैज्ञानिक तरीके से लाया और उसका वैज्ञानिक उपयोग करने के रास्ते खोजे जो आपकी कल्पना तक में नहीं थे, और जब आधार लागू हो गया, अच्छे ढंग से लागू हो गया। गरीब से गरीब व्यक्ति को अच्छी तरह उसका लाभ मिलने लगा, तो आपको आधार का implementation बुरा लगने लग गया। चट भी मेरी, पट भी मेरी। यह खेल चलता है क्या? और इसलिए आज 115 करोड़ से ज्यादा आधार बन चुके हैं। करीब केंद्र सरकार की चार सौ योजनाएं Direct benefit transfer scheme से गरीबों के खाते में सीधे पैसे जाने लगे हैं। 57 हजार करोड़ रुपया, अरे आपने ऐसी-ऐसी विधवाओं को पेंशन दिया है, जो बेटी का जन्म नहीं हुआ, वो कागज़ पर विधवा हो जाती है। सालों तक पेंशन जाता है, पैसे जाते हैं, और मलाई खाने वाले बिचौलिए मलाई खाते हैं। विधवा के नाम पर, बुजुर्गों के नाम, दिव्यांगों के नाम पर, सरकारी खजाने से निकले पैसे बिचौलियों के जेब में गए हैं और राजनीति चलती रही है। आज आधार के कारण Direct benefit transfer से आप दुखी है, ऐसा नहीं है। आपका दुख का कारण है यह जो बिचौलियों की चाल थी, वो बिचौलियों की चाल खत्म हुई है और इसलिए जो रोजगार गया है बिचौलियों का गया है। जो रोजगार गया है, बेईमानों का गया है, जो रोजगार गया है देश को लूटने वालों का गया है।

अध्यक्ष महोदया, चार करोड़ गरीब और मध्यम वर्ग के परिवारों को मुफ्त बिजली कनेक्शन देने का सौभाग्य हम लाए हैं। आप कहेंगे कि लोगों के घरों में बिजली देने की योजना हमारे समय हुई थी। होगी, लेकिन क्या बिजली थी? क्या ट्रांसमिशन लाइनें थी? अरे 18 हजार गांव तक खम्बे तक नहीं लगे थे, 18वीं शताब्दी में जीने के लिए वो मजबूर हुआ था और आज आप यह कह रहे हैं कि हमारी योजना थी। और हम किसी भी development के लिए टुकड़ों में नहीं देखते। हम एक holistic integrated approach और दूरदृष्टि के साथ और दूरगामी परिणाम देने वाली योजना के साथ हम चीजों को आगे करते हैं। सिर्फ बिजली का विषय मैं बताना चाहता हूँ। आपको पता चलेगा कि सरकार के काम करने का तरीका क्या है। हम किस तरीके से काम करते हैं। बिजली व्यवस्था सुधारने के लिए चार करोड़ घरों में, देश में कुल घर है 25 करोड़, चार करोड़ घरों में आज भी बिजली न होना मतलब कि करीब-करीब 20 percent लोग आज भी अंधेरे में ज़िंदगी गुजार रहे हैं। यह गर्व करने जैसा विषय नहीं है। और आपने यह हमें विरासत में दिया है, जिसको पूरा करने का हम प्रयास कर रहे हैं। लेकिन कैसे कर रहे हैं। हम बिजली व्यवस्था सुधारने के लिए चार अलग-अलग चरणों में चीजों को हमने हाथ लगाया। एक बिजली उत्पादन प्रोडक्शन, transmission, distribution और चौथा आता है connection। और यह सारी चीजें एक साथ हम आगे बढ़ा रहे हैं। सबसे पहले हमने बिजली के प्रोडक्शन बढ़ाने पर बल दिया। सौर ऊर्जा हो, हाइड्रो ऊर्जा हो, थर्मल हो, न्यूक्लियर हो, जो भी क्षेत्र से बिजली हो सकती है और उस पर हमने बल दे करके बिजली का उत्पादन बढ़ाया। transmission network में हमने तेज गति से वृद्धि की। पिछले तीन सालों में डेढ़ लाख करोड़ रुपये से अधिक प्रोजेक्ट पर काम किया। यह पिछली सरकार के आखिरी तीन वर्षों की तुलना में 83 percent ज्यादा है। हमने स्वतंत्रता के बाद देश में कुल स्थापित transmission line इसमें 2014 के बाद 31 percent यानी आजादी के बाद जो था, उसमें 31 percent अकेले हमने आ करके बढ़ाया। transformer capacity पिछले तीन साल में 49 percent हमने बढ़ाई है। कश्मीर से कन्या कुमारी, कच्छ से कामरो, निर्बाध रूप से बिजली को transmission करने के लिए सारा नेटवर्क का काम हमने खड़ा कर दिया। power distribution

system मजबूत करने के लिए 2015 में उज्जवल डिस्कॉम इंश्योरेंस योजना यानी कि उदय योजना और राज्यों को साथ ले करके MOU करके आगे बढ़ाई है। बिजली डिस्ट्रीब्यूशन कंपनियों में बेहतर ऑपरेशन और फाइनेंशियल मैनेजमेंट साबित हो, उस पर हमने बल दिया है। इसके बाद कनेक्शन के लिए घर में बिजली पहुंचाने के लिए सौभाग्य योजना launch की है। एक तरफ बिजली पहुंचाना, दूसरी तरफ बिजली बचाना, हमने 28 करोड़ एलईडी बल्ब बांटे। मध्यम वर्ग का परिवार जो घर में बिजली का उपयोग करता है। 28 करोड़ बिजली के बल्ब पहुंचाने के कारण 15 हजार करोड़ रुपया बिजली का बिल बचा है, जो मध्यम वर्ग के परिवार के जेब में बचा है। देश के मध्यम वर्ग को लाभ हुआ है। हमने wastage of time भी बचाया है, हमने wastage of money को भी रोकने के लिए ईमानदारी का प्रयास किया है।

अध्यक्ष महोदया, यहां पर किसानों के नाम पर राजनीति करने के भरपूर प्रयास चल रहे हैं और उनको भी मददगार लोग मिल जाते हैं। यह सच्चाई है कि आजादी के 70 साल के बाद भी हमारे किसान जो उत्पादन करते हैं करीब-करीब एक लाख करोड़ रुपयों का यह जो उत्पादित चीजें हैं फल हो, फूल हो, सब्जी हो, अन्न हो यह खेत से लेकर स्टोर तक और बाजार के साथ जो सप्लाई चेंज चाहिए उसकी कमी के कारण वो सम्पदा बर्बाद हो जाती है। हमने प्रधानमंत्री किसान सम्पदा योजना शुरू की और हम उस infrastructure को बल दे रहे हैं कि किसान जो पैदावर करता है उसको रख-रखाव की व्यवस्था मिले, कम खर्च से मिले और उसकी फसल बर्बाद न हो, उसकी गारंटी तैयार है।

सरकार ने सप्लाई चेन में नई infrastructure को तैयार करने में मदद करने का फैसला किया है। और इसके बाद जो एक लाख करोड़ बचेगें वो देश को किसानों को food processing में लगे हुए मध्यम वर्ग के नौजवानों को गांव में ही कृषि आधारित उद्योगों के लिए अवसर की संभावना पैदा हुई है। हमारे देश में जितना कृषि का महत्व है उतना ही पशु-पालन का, वो एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। हमारे देश में पशु-पालन के क्षेत्र में आवश्यक प्रबंधन के अभाव में सालाना 40 हजार करोड़ रुपये का नुकसान होता है। हमने पशुओं की चिंता करना कामधेनु योजना के द्वारा इन पशुओं का रख-रखाव की चिंता करने के लिए, उनके आरोग्य की चिंता करने के लिए एक बड़ा aggressive काम शुरू किया है। और उसके कारण कामधेनु योजना का लाभ देश के पशु-पालन को और जो किसान पशु-पालन करता है। उनको एक बहुत बड़ी राहत मिलने वाली है। हम दोगुना 22 में इनकम करने की बात करते हैं। 80 में 21वीं सदी की बात करना वो तो मंजूर था लेकिन मोदी अगर आज 2018 में आजादी के 75 साल वाले 2022 को याद करे तो आपको तकलीफ हो रही है। कि मोदी 22 की बात क्यों करता है। आप 80 में 21वीं सदी के गीत गाते थे। देश को दिखाते रहते थे। और जब मेरी सरकार निर्धारित काम के साथ 2022 आजादी के 75 साल एक inspiration एक प्रेरणा उसको लेकर के अगर काम कर रही है। तो आपको उसकी भी तकलीफ हो रही है। और किसानों की आय दोगुना करना। आप शंकाओं में इसलिए जीते हैं कि आपने कभी बड़ा सोचा ही नहीं, छोटे मन से कुछ होता नहीं, छोटे मन से कुछ होता नहीं। आप किसान की आय दोगुना करनी क्या हम उसकी लागत में कमी नहीं कर सकते। Soil Health Card के द्वारा ये संभव हुआ है, Solar Pump के द्वारा ये संभव हुआ है। Urea Neem coating के कारण ये संभव हुआ है। ये सारी चीजें किसान की लागत कम करने के लिए काम आने वाली चीजे हैं ऐसी अनेक चीजों को हमने आगे बढ़ाया है। उसी प्रकार से किसान को अपने किसानों का रोबार के साथ हमने bamboo का निर्णय किया। अगर वो अपने खेत के किनारे पर bamboo लगाएगा। और आज उस bamboo का assured market है। आज देश हजारों करोड़ रुपये का bamboo import करता है। आपकी एक गलत नीति के कारण। क्या आपने bamboo को tree कह दिया, पेड़ कह दिया और उसके कारण कोई bamboo काट नहीं सकता था। मेरे north east के लोग परेशान हो गए। हममें हिम्मत है कि हमने bamboo को grass की category में लाकर के रखा। वो किसान की आय बढ़ाएगा। अपने खेत पर किनारे पर अगर वो bamboo लगाता है। उसकी छाया के कारण किसान को तकलीफ नहीं होती है। उसकी अतिरिक्त Income बढ़ेगी। हम दूध के उत्पादन को बढ़ाना चाहते हैं। प्रति पशु हमारे

यहां दूध का उत्पादन होता है। उसको बढ़ाया जा सकता है। हम मधुमक्खी पालन पर बल देना चाहते हैं। आपको हैरानी होगी मधुमक्खी पालन में करीब-करीब 40 प्रतिशत वृद्धि हुई। मद export करने में हुए और बहुत कम लोगों को मालूम होगा। आज दुनिया holistic healthcare, ease of living इसपे बल दे रहा है और इसीलिए उसको chemical wax से बचकर के bee wax के लिए आज पूरी दुनिया में bee wax का बहुत बड़ा market है। और हमारा किसान खेती के साथ मधुमक्खी का पालन करेगा। तो bee wax के कारण उसको एक उत्तम प्रकार का और आय में भी बदलाव होगा। हम ये भी जानते हैं कि मधुमक्खी फसल को उगाने में भी एक नई ताकत देती है। अनेक ऐसे क्षेत्र हैं और ये सारे काम दूध उत्पादन, poetry farm, fisheries हो, bamboo होए value edition ये सारी चीजें हैं। जो किसान की आय को डबल करती है। हम जानते हैं कि जो लोग सोचते थे आधार कभी आएगा नहीं- आ गया, उनको ये भी परेशानी थी कि जीएसटी नहीं आएगी और हम सरकार को डुबोते रहेंगे। अब जीएसटी आ गई, आ गई तो क्या करें तो नया खेल खेले, ये खेल चल रहा है। कोई देश की राजनीतिक नेतागिरी देश को निराश करने का काम कभी नहीं करती। लेकिन कुछ लोगों ने इस काम का रास्ता अपनाया है। आज सिर्फ जीएसटी के कारण logistic में जो फायदा हुआ है। हमारी ट्रक पहले जितना समय जाता था उसका wastage जाम के कारण, टोल टैक्स के कारण। आज उसका वो बच गया। और हमारी transportation की capacity को 60 प्रतिशत डिलीवरी की ताकत नई आई है। जो काम पांच छह दिन में एक ट्रक जाकर करता था। वो आज ढाई-तीन दिन में पूरा कर रहा है। ये देश को बहुत बड़ा फायदा हो रहा है। हमारे देश में मध्यम वर्ग भारत को आगे ले जाने में उसकी बहुत बड़ी भूमिका है। मध्यम वर्ग को निराश करने के लिए भ्रम फैलाने के प्रयास हो रहे हैं। हमारे देश का मध्यम वर्ग का व्यक्ति good governance चाहता है। बेहतरीन व्यवस्थाएं चाहता है। वो अगर ट्रेन की टिकट ले तो ट्रेन में उसके हक की सुविधा चाहता है। अगर वो कॉलेज में बच्चे को पढ़ने के लिए भेजे तो उसको अच्छी शिक्षा चाहता है। बच्चों को स्कूल भेजे तो स्कूल में अच्छी शिक्षा चाहता है। वो खाना खरीदने जाए तो खाने की quality अच्छी मिले ये मध्यम वर्ग का व्यक्ति चाहता है। और सरकार का ये काम है। कि पढ़ाई की बेहतर संस्थान हों, उचित मूल्य पर उसको घर मिले, अच्छी सड़कें मिलें, ट्रांसपोर्ट की बेहतर सुविधाएं मिलें, आधुनिक Urban Infrastructure हो, मध्यम वर्ग की आशा-आंकाक्षाओं को पूरा करने के लिए ease of living के लिए ये सरकार डेढ़ साल से कदम उठा रही है। हमने और ये सुनकर के हैरान हो जाएंगे ये लोग entry level income tax दुनिया में 5 प्रतिशत की दर पर सबसे अगर कम कहीं है तो भारत हिन्दुस्तान में है। जो गरीबों को किसी समृद्ध देश में भी नहीं है, समृद्ध देश में भी नहीं है वो हमारे यहां है। 2000 के पहले बजट में टैक्स से छूट की सीमा पचास हजार रूपया बढ़ाकर ढाई लाख रूपया कर दिया गया था। इस वर्ष बजट में चालीस हजार रुपये का standard deduction हमने मंजूर कर दिया है। senior citizen को टैक्स में छूट का भी प्रावधान किया है। मध्यम वर्ग को करीब 12 हजार करोड़ रुपये का सालाना नया फायदा ये जुड़ता जाए ये काम हमारी सरकार ने किया है। प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी 31 हजार करोड़ से ज्यादा खर्च हमने किया है। ब्याज में पहली बार इस देश में मध्यम वर्ग के लोगों को ब्याज में राहत देने का काम इस सरकार ने किया है। नए एम्स, नई आईआईटी, नए IIM 11 बड़े शहरों में मेट्रो 32 लाख से ज्यादा street LED light कर दी गई है। और इसलिए नए उद्यमों MSME ये कोई इंकार नहीं कर सकता। MSME क्षेत्र के साथ जुड़े लोग ये मध्यम वर्ग और उच्च मध्यम वर्ग है। ढाई सौ करोड़ के turnover पर हमने टैक्स रेट 30 प्रतिशत से कम करके 25 प्रतिशत करके मध्यम वर्ग के समाज की बहुत बड़ी सेवा की है। 5 प्रतिशत दिया है। 2 करोड़ रुपये तक कारोबार करने वाले सभी व्यापारियों को केवल बैंकिंग जनों के माध्यम से लेन-देन करते हैं। सरकार उनकी आय को turnover का 8 प्रतिशत नहीं 6 प्रतिशत मानती है। यानि उन्हें टैक्स पर 2 प्रतिशत का लाभ होता है। जीएसटी में डेढ़ करोड़ रुपये तक की turnover वाले कारोबार को composition scheme दी और turnover का केवल एक प्रतिशत का भुगतान ये भी दुनिया में सबसे कम हिन्दुस्तान में करने वाली ये सरकार है।

माननीय अध्यक्ष महोदया, जनधन योजना 31 करोड़ से ज्यादा गरीबों के बैंक अकाउंट खुलना, 18 करोड़ से ज्यादा गरीबों को स्वास्थ्य सुरक्षा की बीमा योजना का लाभ हो, 90 पैसे प्रतिदिन यो एक रुपया महीना इतना अच्छा प्रोजेक्ट वाला बीमा हमने देश को, गरीबों को दिया। और आप, आपको ये जानकर के ये संतोष होगा कि इतने कम समय में ऐसे गरीब परिवारों के ऊपर आफत आई तो Insurance की योजना के कारण ऐसे परिवारों को दो हजार करोड़ रुपया उनके घर में पहुंच गया। ये, ये असामान्य काम हुआ है।

उज्ज्वला योजना के तहत तीन करोड़ तीस लाख मां-बहनों को, गरीब मां-बहन, अरे गैस का कनेक्शन के लिए ये एमपीओ के कुर्ते पकड़ कर चलना पड़ता था। हम सामने से जाकर के ये गैस कनेक्शन दे रहे हैं और अब संख्या हमने 8 करोड़ करने का निर्णय किया है।

आयुषमान भारत योजना में हैरान हूं क्या देश के गरीब को स्वास्थ्य सुविधा मिलनी चाहिए कि नहीं मिलनी चाहिए। गरीब पैसों के अभाव में इलाज करवाने नहीं जाता है, वो मृत्यु को पसंद करता है। लेकिन बच्चों के लिए वो कर्ज छोड़कर के जाना नहीं चाहता है। क्या ऐसे गरीब निम्न वर्ग के परिवारों की रक्षा करने का निर्णय गलत हो सकता है क्या? हां आपको लगता है कि इस प्रोजेक्ट में कोई बदलाव करना है तो अच्छे positive सुधार लेकर के आइए। मैं स्वयं समय देने के लिए तैयार हूं। ताकि देश के गरीबों को पांच लाख रुपये तक सालाना खर्च करें उसके काम आए सरकार लेकिन आप उसके लिए भी इस प्रकार के बयानबाजी कर रहे हैं। अच्छी योजना है, जरूर मुझे सुझाइए, हम मिल-बैठकर के नकी करेंगे, तय करेंगे।

अध्यक्ष महोदया जी, हमारी सरकार ने जो कदम उठाए हैं। उतने सरकार के जमात के भी सोचने के तौर तरीके में बदलाव किया है। जनधन योजना गरीब का आत्मविश्वास बढ़ाया है। बैंक में पैसे जमा कर रहा है। रुपये डेबिट कार्ड उपयोग कर रहा है। वो भी अपने-आपको समृद्ध परिवारों की बराबरी में देखने लगा है। स्वच्छ भारत मिशन महिलाओं के अंदर एक बहुत बड़ा आत्मविश्वास पैदा करने का काम किया है। अनेक प्रकार की पीड़ाओं से उसको मुक्ति देने का कारण बना है। उज्ज्वला योजना गरीब माताओं को धुएं से मुक्ति दिलाने का काम कहा। पहले हमारा श्रमिक या तो अच्छी नौकरी पाने के लिए पुरानी नौकरी छोड़ने की हिम्मत नहीं करता था, क्योंकि पुराने जमा पैसे डूब जाएंगे। हमने उनके unclaimed 27 हजार करोड़ रुपया universal account number दे करके उस तक पहुंचाने का काम किया है और आगे गरीब मजदूर जहां जाएगा, उसका बैंक अकाउंट भी साथ-साथ चलता जाएगा। यह काम किया है। भ्रष्टाचार और कालाधन। अभी भी आपको रात को नींद नहीं आती। मैं जानता हूं आपकी बैचेनी भ्रष्टाचार के कारण जमानत पर जीने वाले लोग भ्रष्टाचार के कामों से बचने वाले नहीं हैं, कोई भी बचने वाला नहीं है। पहली बार हुआ है देश में, चार-चार पूर्व मुख्यमंत्री भारत की न्यायपालिका ने उनको दोषित घोषित कर दिया है और जेल में जिंदगी गुजारने के लिए मजबूर होना पड़ा है। यह हमारा commitment है। देश को जिन्होंने लूटा है उनको देश को लौटाना पड़ेगा और इस काम में मैं कभी पीछे हटने वाला नहीं हूं। मैं लड़ने वाला इंसान हूं, इसलिए देश में आज एक ईमानदारी का माहौल बना है। एक ईमानदारी का उत्सव है। अधिक लोग आज आगे आ रहे हैं, Income Tax देने के लिए आ रहे हैं। उनको भरोसा है कि शासन के पास खजाने में जो पैसा जाएगा, पाई-पाई का हिसाब मिलेगा, सही उपयोग होगा। यह काम हो रहा है।

आज मैं एक विषय को जरा विस्तार से कहना चाहता हूं। कुछ लोगों को झूठ बोलो, जोर से झूठ बोलो, बार-बार झूठ बोलो, यह फैशन हो गया है। हमारे वित्त मंत्री ने बार-बार इस बात को कहा है, तो भी उनकी मदद करने चाहने वाले लोग, सत्य को दबा देते हैं और झूठ बोलने वाले लोग चौराहे पर खड़े रह करके जोरों से झूठ बोलते रहते हैं। और वो मसला है एनपीए का, मैं इस सदन के माध्यम से, अध्यक्ष महोदया आपके माध्यम से आज देश को भी कहना चाहता हूं कि आखिर एनपीए का मामला है क्या? देश को पता चलना चाहिए कि एनपीए के पीछे यह पुरानी सरकार के कारोबार है और शत-



प्रतिशत पुरानी सरकार जिम्मेदार है, एक प्रतिशत भी कोई और नहीं है। आप देखिए उन्होंने ऐसी बैंकिंग नीतियां बनाई कि जिसमें बैंकों पर दबाव डाले गए टेलिफोन जाते थे, अपने चहेतों को लोन मिलता था। वो लोन पैसा नहीं दे पा रहे थे। बैंक, नेता, सरकार, बिचौलिये मिल करके उसका restructure करते थे। बैंक से गया पैसा कभी बैंक में आता नहीं था। कागज पर आता-जाता, आता-जाता चल रहा था और देश, देश लूटा जा रहा था। उन्होंने अरबों-खरबों रुपया दे दिया। हमने बाद में आ करके, आते ही हमारे ध्यान में विषय आया, अगर मुझे राजनीति करनी होती, तो मैं पहले ही दिन देश के सामने वो सारे तथ्य रख देता, लेकिन ऐसे समय बैंकों की दुर्दशा की बात देश के अर्थतंत्र को तबाह कर देती। देश में एक ऐसे संकट का माहौल आ जाता उससे निकलना मुश्किल हो जाता और इसलिए आपके पापों को देखते हुए, सबूत होते हुए मैंने मौन रखा, मेरे देश की भलाई के लिए। आपके आरोप मैं सहता रहा, देश की भलाई के लिए। लेकिन अब बैंकों को हमने आवश्यक ताकत दी है, अब समय आ गया है कि देश के सामने सत्य आना चाहिए। यह एनपीए आपका पाप था और मैं यह आज इस पवित्र सदन में खड़ा रह करके कह रहा हूं। मैं लोकतंत्र के मंदिर में खड़ा रह करके कह रहा हूं। हमारी सरकार आने के बाद एक भी लोन हमने ऐसी नहीं दी है जिसको एनपीए की नौबत आई हो। और आपने छुपाया, आपने क्या किया, आपने आंकड़े गलत दिए, जब तक आप थे, आपने बताया एनपीए 36 percent हैं। हमने जब देखा और 2014 में हमने कहा कि भई झूठ नहीं चलेगा सच कहो, जो होगा देखा जाएगा और जब सारे कागजात खंगालना शुरू किया तो आपने जो देश को बताया था वो गलत आंकड़ा था, 82 percent एनपीए था, 82 percent. मार्च 2008 में बैंकों द्वारा दिया गया कुल advance 18 लाख करोड़ रुपये और हमने छह साल में आप देखिए क्या हाल हो गया, 8 में 18 लाख करोड़ और आप जब तक मार्च 2000 तक बैठे थे, यह 18 लाख करोड़ पहुंच गया 52 लाख करोड़ रुपया, जो देश के गरीब का पैसा आपने लूटा था। और लगातार हम restructure करते रहे कागज पर हां, लोन आ गया, लोन दे दिया। आप ऐसे ही उनको बचाते रहे, क्योंकि बीच में बिचौलिये थे, क्योंकि वो आपको चहेते थे, क्योंकि आपको उसमें कोई न कोई हित छिपा हुआ था। और इसलिए आपने यह काम किया। हमने यह तय किया कि जो भी तकलीफ होगी सहेंगे, लेकिन साफ-सफाई और मेरा स्वच्छता अभियान सिर्फ चौराहें तक नहीं है। मेरा स्वच्छता अभियान इस देश के नागरिकों के हक के लिए इन आचार-विचार में भी है। और इसलिए हमने इस काम को किया है।

हमने योजना बनाई चार साल लगे रहे। हमने recapitalisation पर काम किया है। हमने दुनियाभर के अनुभव पर अध्ययन किया है और देश की बैंकिंग सेक्टर को ताकत भी दी है। ताकत देने के बाद की आज मैं पहली बार चार साल आपके झूठ को झेलता रहा। आज मैं देश के सामने पहली बार यह जानकारी दे रहा हूं। 18 लाख से 52 लाख, 18 लाख करोड़ से 52 लाख करोड़ लूटा दिया आपने, और आज जो पैसे बढ़ रहे हैं वो उस समय के आपके पाप का ब्याज है। यह हमारी सरकार के दिए हुए पैसे नहीं है। यह जो आंकड़ा बदला है, वो 52 लाख करोड़ पर ब्याज जो लग रहा है उसका है। और देश कभी इस पाप के लिए आपको माफ नहीं करेगा और कभी न कभी तो यह चीजें इसका हिसाब देश को आपको देना पड़ेगा।

मैं देख रहा हूं, हिट और रन वाली राजनीति चल रही है, कीचड़ फेंकों और भाग जाओ, जितना ज्यादा कीचड़ उछालोगे कमल उतना ही ज्यादा खिलने वाला है और उछालो, जितना उछालना है, उछालो और इसलिए मैं जरा कहना चाहता हूं अब इसमें मैं कोई आरोप नहीं करना चाहता, लेकिन देश तय करेगा कि क्या है? आपने कतर से गैस लेने का 20 साल का कॉन्ट्रैक्ट किया था, और जिस नाम से गैस का कॉन्ट्रैक्ट किया था हमने आ करके कतर से बात की, हमने अपना पक्ष रखा, भारत सरकार बंधी हुई थी, आप जो सौदा कर गए थे हमको उसको निभाना था, क्योंकि देश की सरकार की अपनी एक विवशता होती है। लेकिन हमने उनको तथ्यों के सामने रखा, हमने उनको विवश किया और मेरे



देशवासियों को खुशी होगी अध्यक्ष महोदया, यह पवित्र सदन में मुझे यह कहते हुए संतोष हो रहा है कि हमने कतार को renegotiation किया और गैस की जो हम खरीदी करते थे करीब-करीब आठ हजार करोड़ रुपये देश का हमने बचाया।

आपने आठ हजार करोड़ ज्यादा दिया था। क्यों दिया, किसके लिए दिया, कैसे दिया, क्या इसके लिए सवाल या निशान खड़े हो सकते हैं, वो देश तय करेगा, मुझे नहीं कहना है। उसी प्रकार से मैं यह भी कहना चाहूंगा ऑस्ट्रेलिया के अंदर गैस के लिए भारत सरकार का एक सौदा हुआ था। गैस उनसे लिया जाता था हमने उनसे भी negotiation किया, लम्बे समय का किया और आपने ऐसा क्यों नहीं किया, हमने चार हजार करोड़ रुपया उसमें भी बचाया। देश के हक का पैसा हमने बचाया, क्यों दिया, किसने दिया, कब दिया, किसके लिए दिया, किस हेतु से दिया, यह सारे सवालों के जवाब आपको कभी देंगे नहीं, मुझे मालूम है, देश की जनता जवाब मांगने वाली है।

छोटा सा विषय एलईडी बल्ब कोई मुझे बताए, क्या कारण था कि आपके समय में वो बल्ब तीन सौ, साढ़े तीन सौ रुपये में बिकता था। भारत सरकार तीन सौ, साढ़े तीन सौ में खरीदती थी। क्या कारण है कि वही बल्ब, कोई टेक्नोलॉजी में फर्क नहीं। कोई क्वालिटी में फर्क नहीं। देने वाली कंपनी वही, साढ़े तीन सौ का बल्ब, 40 रुपये में कैसे आने लगा। जरा कहना पड़ेगा, आपको कहना पड़ेगा, आपको जवाब देना पड़ेगा। मुझे बताइये सोलर एनर्जी क्या कारण है कि आपके समय सोलर पावर यूनिट 12 रुपया, 13 रुपया, 14 रुपया, 15 रुपया लूटो, जिसको भी लूटना है लूटो, बस हमारा खयाल रखो। इसी मंत्र को ले करके चला। आज वही सोलर पावर दो रुपया, तीन रुपये के बीच में आ गया है। लेकिन उसके बावजूद हम आप पर भ्रष्टाचार के आरोप नहीं लगाते। देश को लगाना है, लगाएगा। मैं उसमें अपने आप को संयमित रखना चाहता हूं। लेकिन यह हकीकत बोल रही है कि क्या हो रहा था और इसलिए, और आज विश्व में भारत का मान-सम्मान बढ़ा। आज भारत के पासपोर्ट की ताकत सारी दुनिया में जहां हिन्दुस्तानी हिन्दुस्तान का पासपोर्ट ले करके जाता है, सामने मिलने वाला आंख ऊंची करके गर्व के साथ देखता है। आपको शर्म आती है, विदेशों में जा करके देश की गलती गलत तरीके से पेश कर रहे हो। जब देश डोकलाम की लड़ाई लड़ रहा था, खड़ा था, आप चीन के लोगों से बात कर रहे थे। आपको याद होना चाहिए ससंदीय प्रणाली, लोकतंत्र, देश, विपक्ष, एक जिम्मेदार पक्ष क्या होता है? शिमला करार जब हुआ इंदिरा गांधी जी ने बैनजीर बुटो जी के साथ करार किया। हमारी पार्टी का इकरार था, लेकिन इतिहास गवाह है अटल बिहारी वाजपेयी इंदिरा जी का समय मांगा, इंदिरा जी को मिलने गए और उनको बताया कि देशहित में यह गलत हो रहा है, बस हमने बाहर आ करके उस समय देश का कोई नुकसान नहीं होने दिया था। देश की हमारी जिम्मेदारी होती थी। जब हमारी सेना का जवान सर्जिकल स्ट्राइक करता है, आप सवालिया निशान खड़ा करते हैं। मैं समझता हूं जब देश में एक कॉमन वेल्थ गेम हुआ इस देश में एक कॉमन वेल्थ गेम हुआ, अभी भी कैसी-कैसी चीजें लोगों के मन में सवालिया निशान बनी हैं। इस सरकार में आने के बाद 54 देशों का इंडिया अफ्रीका summit हुआ। ब्रिक्स समिट हुआ, फीफा अंडर-17 का वर्ल्ड कप हुआ। इतनी बड़ी-बड़ी योजनाएं हुईं, अरे अभी 26 जनवरी को आसियान के 10 देश के मुखिया आ करके बैठे थे और मेरा तिरंगा लहरा रहा है। आपने सोचा नहीं था कभी, अरे जिस दिन नयी सरकार का शपथ हुआ और सार्क देशों के मुखिया आ करके बैठ गए तो आपके मन में सवाल था कि 70 साल में हमें क्यों समझ में नहीं आया छोटा मन बड़ी बात नहीं कर सकता है।

अध्यक्ष महोदया, एक न्यू इंडिया का सपना, उसको ले करके देश आगे बढ़ना चाहता हूं। महात्मा गांधी ने यंग इंडिया की बात कही थी, स्वामी विवेकानंद जी ने नये भारत की बात कही थी, हमारे राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने जब पद पर थे तब भी नये भारत का सपना सबके सामने रखा था। आओ हम सब मिल करके नया भारत बनाने के संकल्प को पूर्ण करने के लिए अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह करें। लोकतंत्र में आलोचनाएं लोकतंत्र की ताकत है। यह होना चाहिए, तभी तो अमृत निकलता है, लेकिन

लोकतंत्र झूठे आरोप करने का अधिकार नहीं देता है। अपनी राजनीतिक रोटियां सेंकने के लिए देश को निराश करने का हक नहीं देता है। और इसलिए मैं आशा करता हूं कि राष्ट्रपति जी के अभिभाषण को बोलने वालों ने बोल लिया, अब जरा आराम से उसको पढ़ें। पहली बार पढ़ने पर समझ में नहीं आया, तो दोबारा पढ़ें। भाषा समझ नहीं आई है, तो किसी की मदद लें। लेकिन जो black-white में सत्य लिखा गया है, उसको नकारने का काम न करें। इसी एक अपेक्षा के साथ राष्ट्रपति के अभिभाषण पर जिन-जिन मान्य सदस्यों ने अपने विचार व्यक्त किए, मैं उनको अभिनंदन करता हूं और मैं सबको कहता हूं कि सर्वसम्मति से राष्ट्रपति जी के अभिभाषण को हम स्वीकार करें। इसी अपेक्षा के साथ आपने जो समय दिया, मैं आपका बहुत-बहुत आभारी हूं, धन्यवाद।

\*\*\*\*\*

**अतुल तिवारी/हिमांशु सिंह/बाल्मीकि महतो/तारा**

(रिलीज़ आईडी: 1521426) आगंतुक पटल : 96

प्रधानमंत्री कार्यालय

# राज्य सभा के सेवानिवृत्त सदस्यों को प्रधानमंत्री द्वारा दिए गये विदाई भाषण का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 28 MAR 2018 2:13PM by PIB Delhi

आदरणीय सभापतिजी, सम्माननीय सदन।

हम में से कुछ साथी अब इस अनुभव को ले करके समाज सेवा की अपनी भूमिका को और मजबूत करेंगे, ऐसा मेरा पूरा विश्वास है। सदन में से जो जाने वालेवाले महानुभाव हैं, इनका हरेक का अपना योगदान है, हरेक का अपना महात्म्य है और हर किसी ने राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य के लिए इस सदन में रहते हुए जो भी योगदान कर सकते हैं, करने का प्रयास किया है। और उन सबको राष्ट्र कभी भूल नहीं सकता है।

मेरी तरफ से आपकी सब उत्तम सेवाओं के लिए आप सबको बहुत-बहुत बधाई है और भविष्य के लिए आपको बहुत-बहुत शुभकामनाएं भी हैं।

ये सदन उन वरिष्ठ महानुभावों का है कि जिनके जीवन का अनुभव सदन में value addition करता है। समाज जीवन की आशा-आकांक्षाओं को एक निष्पक्ष भाव से तराजू से तोल करके भविष्य की समाज व्यवस्था में क्या पूरकहोगा क्या पूरकनहीं होगा, उसका लेखा-जोखा करने का सामर्थ्य इस वरिष्ठ सदन में रहता है, वरिष्ठ महानुभावों से रहता है और उसके कारण यहां पर जो बात बताई जाती है उसका अपना एक विशेष मूल्य है, उसका एक विशेष महत्व है और वो महत्व ही है जो हमारे नीति निर्धारण में बहुत बड़ी अहम भूमिका अदा करता है।

हमारे बीच में आदरणीय पराशरण जी जैसे महानुभाव, जिन्होंने अपने जीवन में एक professionalism के साथ-साथ एक तपस्वी जीवन भी जिया है। ऐसे लोग हमारे बीच थे, सदन में से हमें उनका लाभ नहीं मिलेगा।

दो, भारत जिनके लिए गर्व करता है, ऐसे खिलाड़ी श्रीमान दिलीप जी और सचिन जी, ये दो भी आने वाले दिनों में हमारे बीच में, उनका लाभ हमें नहीं मिल पाएगा। प्रोफेसर कुरियन साहब को हमेशा लोग याद करेंगे। उनका हंसता हुआ चेहरा हमेशा, और सीखना चाहिए कि बात तो वही बतानी है लेकिन हंसते हुए बतानी है, उनकी विशेषता रही और उसी के कारण संकट की घड़ी में भी सदन को ठीक से चलाने में उनकी अहम भूमिका रही है।

ये बात सही है कि हम में से बहुत कम लोग हैं जिसके पीछे दल और दल की विचारधारा का नाता न रहा हो। बहुत कम लोग हैं, ज्यादातर हम वही लोग हैं जिनका कोई न कोई background है और इसलिए स्वाभाविक है यहां पर उन बातों को प्रतिस्थापित करने के लिए हम लोगों का प्रयास रहना बहुत स्वाभाविक भी है।

लेकिन ये भी अपेक्षा रहती है कि जो ग्रीन हाउस में होता है वो रेड हाउस में होना ही चाहिए, जरूरी नहीं है। और इसलिए क्योंकि एक वरिष्ठ सदन का अपना एक महात्म्य रहता है, हरेक ने अपनी-अपनी उस भूमिका को निभाया है।

मैं मानता हूं शायद आप में से बहुत लोग होंगे जिन्होंने सोचा होगा कि जब आखिरी सत्र होगा तो ये विषय मैं उठाऊंगा, मैं ऐसी तैयारी करके जाऊंगा कि जाते-जाते एक बड़ा ऐतिहासिक भाषण करके जाऊं, मैं ऐसे विचार रख करके देश के लिए कुछेक महत्वपूर्ण काम के अंदर अपना योगदान दे करके जाऊं, लेकिन शायद वो सौभाग्य जाते-जाते आप लोगों को नहीं मिला। उसके लिए यहां की जिम्मेदारी नहीं है, यहां से यहां तक हम सबकी जिम्मेदारी है कि आपको ऐसे ही जाना पड़ रहा है।

अच्छा होता आप जाने से पहले कोई महत्वपूर्ण निर्णय में बहुत ही उत्तम प्रकार की भूमिका निभा करके आखिर-आखिर में कोई उत्तम चीजें छोड़ करके जाने का अवसर मिल गया होता तो आपको एक विशेष संतोष होता। लेकिन शायद इस सदन का ही कारण रहा कि आप उस सौभाग्य से वंचित रह गए। कल तो लग रहा कि शायद आज ये भी मौका छूट जाएगा। लेकिन चेयरमैन श्री ने काफी मेहनत की, सबको समझाने का प्रयास किया, सबको साथ लेने का प्रयास किया। श्रीमान विजय जी भी लगे रहे। आखिरकार ये संभव हुआ कि आज सभी जाने वाले सदस्य अपनी भावना प्रकट कर पाएंगे। लेकिन फिर भी किसी महत्वपूर्ण निर्णय में जो योगदान, इतिहास जिसको हमेशा याद रखता है, वो सौभाग्य आप में से, जाते समय वाला; बीच में तो आपको जरूर अवसर मिला है, उसका आपने उपयोग भी किया है, वो एक छूट गया है। ी म

ट्रिपल तलाक जैसे महत्वपूर्ण निर्णय जो हिन्दुस्तान के आने वाले इतिहास में बहुत बड़ी भूमिका अदा करने वाले हैं, उसका निर्णय करने की प्रक्रिया से आप वंचित रह गए। जो वापिस आए हैं उनको तो सौभाग्य मिलेगा लेकिन जो जा रहे हैं उनको शायद इस ऐतिहासिक महत्वपूर्ण फैसले से वंचित रहना पड़ा, उसका भी कुछ न कुछ तो मन में कसक, आज नहीं तो दस साल, बीस साल, पच्चीस साल बाद जरूर रहेगी, ऐसा मैं मानता हूं। लेकिन अच्छा होता ये सारी चीजें हम कर पाते।

मैं फिर एक बार जो सभी माननीय, आदरणीय सदस्यगण जा रहे हैं, उनको शुभ कामनाएं देता हूं। मैं एक आपके साथी के नाते आपसे एक आग्रह करूंगा कि आप ये मत मानिए कि सदन के दरवाजे बंद होने से इस पूरे परिसर के दरवाजे बंद होते हैं। आपके लिए इस परिसर के दरवाजे खुले हैं, प्रधानमंत्री का कार्यालय खुला है।

देश के हित में आपके मन में जब भी, जो भी विचार आए, आप जरूर आए, मुझे अच्छा लगेगा आपको सुनने का, आपको समझने का और आपके विचारों को जहां भी होंगे आप योगदान देंगे, मैं उसको आगे पहुंचाने का जरूर प्रयास करूंगा।

मैं फिर एक बार आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं, बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं।

अतुल तिवारी/शाहबाज हसीबी/सतीश शर्मा/निर्मल शर्मा

(रिलीज़ आईडी: 1526738) आगंतुक पटल : 214

प्रधानमंत्री कार्यालय

# नवनिर्मित वैस्टर्न कोर्ट एनेक्सी, नई दिल्ली के लोकार्पण समारोह पर प्रधानमंत्री के सम्बोधन का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 04 APR 2018 4:22PM by PIB Delhi

आदरणीय स्पीकर महोदया सुमित्रा जी, मंत्रिपरिषद के मेरे साथी श्री अनंत कुमार जी, श्रीमान हरदीप सिंह पुरी जी, हाऊस कमेटी के chair Person श्रीमान सुरेश अंगड़ी जी, उपस्थित सभी आदरणीय सांसदगण, ताई जी ने अभी बताया कि इतने छोटे से कार्यक्रम के लिए प्रधानमंत्री जी का समय लेना। मैं समझता हूं ये कार्यक्रम छोटा नहीं है। छोटा इसलिए नहीं है क्योंकि आपने बड़ी लगन के साथ इस कार्य को पूरा करने के लिए मेहनत की है। जब टीवी पर लोग देखते हैं Parliament का दृश्य तो उनको ये दिखाई देता होगा कि स्पीकर महोदया सभी MPs को डांट रही हैं, स्पीकर महोदया सभी MPs को बिठा रही हैं। कभी लोगों को लगता होगा कि स्पीकर महोदया को जितना परेशान करते हैं ये लोग एक ज्येष्ठ श्रेष्ठ मां स्वरूप मंच पर सुमित्रा जी बैठी हैं और नीचे ये पांच सौ लोग उनको परेशान कर रहे हैं तो ये दृश्य देश देखता होगा। लेकिन देश आज ये भी दृश्य देखेगा कि एक मां का स्वभाव कैसा होता है और MP यहां आते हैं तो उनको क्या-क्या कठिनाई होती है, उनकी क्या चिंता करनी होती है और उस मां के स्वभाव का परिणाम है कि ये इमारत का निर्माण हुआ है और MPs के guest के लिए और MPs जो नए आते हैं उनके लिए एक आवश्यक उचित व्यवस्था आपके भीतर के उस मातृ रूप के कारण संभव हुई है। और इसके लिए मैं आपको हृदय से बधाई देता हूं। और लोगों को लगेगा कि स्पीकर महोदया सिर्फ हाऊस में discipline के लिए आगे रहीं हैं ऐसा नहीं है वो मां की ममता के द्वारा सभी MPs का ख्याल भी रखती हैं उनकी चिंता भी करती हैं। तो ये सबसे बड़ा इस कार्यक्रम का महत्व है और ऐसे कार्यक्रम में आना ही एक बहुत बड़ा सौभाग्य होता है और इसलिए मेरे लिए मेरे सभी दोनों सदन के सभी सांसद क्योंकि मेरी भी जिम्मेवारी है उस परिवार के मुखिया के नाते और आपने ये व्यवस्था खड़ी की हमारे इस सांसद परिवार के लिए। मैं इसके लिए भी आपका आभारी हूं।

आमतौर पर एक छवि रहती है कि भई सरकारी डिपार्टमेंट के काम ऐसे ही होते हैं छोड़ो कोई बाहर का contractor होगा तो अच्छा होगा लेकिन ये देखने के बाद पता चलेगा कि government agency भी अगर एक बार मन में ठान लें तो कितना उत्तम काम कर सकती है, समय-सीमा में कर सकती है और बजट की मर्यादा में कर सकती है। ये तीनों चीजें हरदीप जी के डिपार्टमेंट ने बहुत ही सुचारू ढंग से पूर्ण की है। इसलिए उस डिपार्टमेंट के सभी अधिकारियों का, इसमें जिन्होंने मेहनत की है उन सबको भी मैं हृदय से बहुत-बहुत बधाई देता हूं। एक उत्तम नजराना इस संसदीय जीवन व्यवस्था के साथ आज जुड़ रहा है और वो भी एक ऐतिहासिक जगह है। जिन लोगों ने इसका पढ़ा होगा। जो लोग 1926 के यहां आपको दस्तावेज मिलेंगे। जब इस west court house में लाला लाजपत राय जी कभी रहते थे। मोतीलाल जी नेहरू यहां रहते थे। वैसी एक ऐतिहासिक विरासत वाली जगह है। और उस विरासत वाली जगह के साथ आप लोगों को भी जुड़ने का अवसर मिलेगा। ये अपने-आपमें मैं मानता हूं एक अच्छा सा काम इस व्यवस्था में हुआ है और जैसा ताई जी ने कहा कि जिसका शिलान्यास हम करते हैं उसका उद्घाटन भी हम ही करते हैं। आपने देखा होगा कि आज उसको हम समय-सीमा से पहले, मैं मानता हूं 4-6 महीने पहले early project पूरा हुआ है और मिल रहा है। सबसे बड़ी आलोचना लगातार होती है जब MP नए आते हैं तो five star hotel में रहते हैं, इतना खर्चा होता है। हर बार ये box item बनता है। लेकिन जो चुनाव नहीं लड़े हैं या जिनको जनता ने वापिस नहीं भेजा है, वो मकान खाली नहीं करते हैं इसकी चर्चा आती नहीं है। और उसी का कारण है कि MPs को hotel में रहना पड़ता है। अब इसके पीछे खर्च भी बहुत होता है और एक बार तो मैंने एक पिछले ही सरकार के समय में किसी MP महोदया का तो इतना सारा अखबार में पढ़ा था। मालूम नहीं है सच-झूठ, बहुत बड़े, बोलने में बड़े माहिर से है वह सज्जन, वो लोगों को इतना करोड़ों का डील हो गया था। और

खाली ही नहीं करते थे उनको वो सूट कर गया था। तो काफी आलोचना भी होती थी। और उसके कारण जो नए MPs आते थे उनके इलाके में उनको बड़ी परेशानी होती थी। क्योंकि नए-नए चुनकर के आते थे और क्षेत्र के लोग जब अखबार में पढ़ते थे तो उनके लिए बड़ी यानी एक प्रकार का बड़ा humiliation होता था।

आपने MPs की इतनी बड़ी सेवा की है कि जो नवनिर्वाचित MP आएंगे उनको होटल में रहने के बजाय यहां रहने के कारण। ये जो आलोचना का शिकार होना पड़ता था। सरकारी खजाने पर जो उसका बर्दन लगता था। वो भी अब, उससे मुक्ति मिलेगी तो एक प्रकार से MP के सम्मान का, सुविधा का नहीं, सम्मान का भी काम इस व्यवस्था के तहत हुआ है और इसलिए मैं अभिनंदन देता हूं।

मैं हमारे दोनों साथी श्रीमान मेघवाल जी और श्रीमान सुरेश जी जैसा स्पीकर महोदया ने बताया कि इन दोनों ने लगन से काम किया, ये हमारे रूडी को भी इसमें बड़ी रूचि थी तो वो भी कभी-कभी आकर के मेरे से इसकी डिजाइन की चर्चा करता रहता था। कि ऐसा बनाएं, वैसा बनाएं, अब मुझे लगता था कि चलो MPs के लिए बनता था तो मैं भी दिमाग खपाता था। ज्यादा मुझे वो architecture वगैरह का knowledge नहीं है। लेकिन रूडी का बड़ा उत्साह रहता था। तो ऐसी चीजें लेकर के वो आया करते थे। लेकिन आज इसको साकार देखकर के हर किसी को खुशी होना बहुत स्वाभाविक है।

आपको मालूम होगा कि डाक्टर बाबा साहब अंबेडकर, उनकी स्मृति में यहां दिल्ली में दो स्थान ऐसे थे कि जिसका निर्माण करने के लिए अटल जी के समय सोचा गया था लेकिन सरकारें चली तो ऐसी चली और बाबा साहब अंबेडकर के नाम पर राजनीति करने के लिए हर कोई दौड़ पड़ता है। लेकिन वो काम अटल जी की सरकार ने निर्णय किया था नहीं। हमने आकर के समय-सीमा में काम पूरा कर दिया। दूसरा काम भी जब मैंने शिलान्यास किया था तब मैंने कहा था कि 2018 अप्रैल में इसका लोकार्पण करूंगा। और मैं आज मुझे बताते हुए खुशी हो रही है कि 13 अप्रैल को 14 अप्रैल बाबा साहब अंबेडकर की जयंती है। 13 अप्रैल को वो छवि, अलीपुर रोड वाला जो मकान है, जिसे हमने तैयार कर लिया है। उसका भी लोकार्पण 13 को हम कर लेंगे। एक श्रद्धा होती है, एक आर्द्रता होता है और इसके लिए एक प्रतिबद्धता होती है। ये हम लोगों की रगों में है। जो हमने करके दिखाया है। बाबा साहब अंबेडकर को शायद किसी सरकार ने इतना मान-सम्मान और श्रद्धांजलि नहीं दी होगी जो इस सरकार ने दी है। और इसलिए बाबा साहब को राजनीति में घसीटने के बजाय बाबा साहब अंबेडकर ने हमें रास्ते दिखाए हैं। उस रास्ते पर चलने के लिए हम सब अगर प्रयास करेंगे जिसके अंदर बन्धुता इसका महात्म्य है। उस बन्धुता को छोड़ करके हम कभी आगे नहीं बढ़ सकते हैं। हमें हर किसी के कल्याण के लिए **सबका साथ-सबका विकास** इसी मंत्र को लेकर के हम चले हैं और हम समाज के आखिरी छोर पर बैठे हुए लोगों के हकों के लिए जीने-मरने वाले लोग हैं और हम जीवन-भर समाज के क्योंकि महात्मा गांधी ने हमें ये ही रास्ता दिखाया है। कि समाज का जो आखिरी छोर पर बैठा है उसकी सबसे पहले चिंता करनी चाहिए और सरकार की ये जिम्मेवारी होती है। और सरकार उस दायित्व को निभा रही है। मैं फिर एक बार इस पूरी टीम को हृदय बहुत-बहुत बधाई देता हूं। आप सबको बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं।

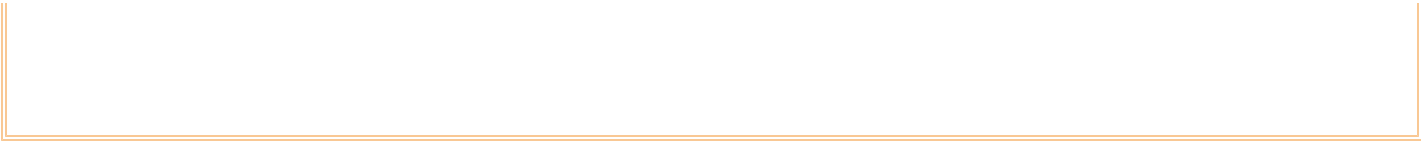
धन्यवाद।

\*\*\*\*\*

अतुल तिवारी, कंचन पतियाल, ममता,

(रिलीज़ आईडी: 1527614) आगंतुक पटल : 945





प्रधानमंत्री कार्यालय

# 20 जुलाई, 2018 को लोकसभा में अविश्वास प्रस्ताव के उत्तर में प्रधानमंत्री के सम्बोधन का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 20 JUL 2018 11:50PM by PIB Delhi

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं आपका आभार व्यक्त करता हूँ, जिस धैर्य के साथ आपने सदन का आज संचालन किया है। यह अविश्वास प्रस्ताव एक प्रकार से हमारे लोकतंत्र की महत्वपूर्ण शक्ति का परिचायक है। भले ही टीडीपी के माध्यम से यह प्रस्ताव आया हो, लेकिन उनके साथ जुड़े हुए कुछ माननीय सदस्यों ने प्रस्ताव का समर्थन करते हुए बातें कही हैं। और एक बहुत बड़ा वर्ग है जिसने प्रस्ताव का विरोध करते हुए बातें कही हैं। मैं भी आपसब से आग्रह करूंगा कि हम सब इस प्रस्ताव को खारिज करें और हम सब तीस साल के बाद देश में पूर्ण बहुमत के साथ बनी हुई सरकार को जिस गति से काम किया है उस पर फिर से एक बार विश्वास प्रकट करें।

वैसे मैं समझता हूँ यह अच्छा मौका है कि हमें तो अपनी बात कहने का मौका मिल ही रहा है, लेकिन देश को यह भी चेहरा देखने को मिला है कि कैसी नकारात्मकता है, कैसा विकास के प्रति विरोध का भाव है। कैसे कैसे नकारात्मक राजनीति ने कुछ लोगों को घेर के रखा हुआ है और उन सबका चेहरा निखर करके सज-धज के बाहर आया है। कईयों के मन में प्रश्न है कि अविश्वास प्रस्ताव आया क्यों? न संख्या है, न सदन में बहुमत है और फिर भी इस प्रस्ताव को सदन में लाया क्यों गया। और सरकार को गिराने की इतना ही उतावलापन था तो मैं हैरान था कि सामने इसको 48 घंटे रोक दिया जाए, चर्चा की जल्दी जरूरत नहीं है। अगर अविश्वास प्रस्ताव पर जल्दी चर्चा नहीं होगी तो क्या आसमान फट जाएगा क्या? भूकंप आ जाएगा क्या? न जाने अगर चर्चा की तैयारी नहीं थी, 48 घंटे और देर कर दो, तो फिर लाए क्यों? और इसलिए मैं समझता हूँ कि इसको टालने की जो कोशिश हो रही थी, वो भी इस बात को बताती है कि उनकी क्या कठिनाई है।

न मांझी, न रहबर, न हक में हवाएं, हैं कश्ती भी जरजर, यह कैसा सफर है।

कभी तो लगता है कि सारे जो भाषण मैं सुन रहा था, जो व्यवहार देख रहा था मैं नहीं मानता हूँ कि कोई अज्ञानवश हुआ है, और न ही यह झूठे आत्मविश्वास के कारण हुआ है। यह इसलिए हुआ है कि अहंकार इस प्रकार की प्रभुति करने के लिए खींच के ले जा रहा है। मोदी हटाओ, और मैं हैरान हूँ आज सुबह भी कि अभी तो चर्चा प्रारंभ हुई थी, मतदान नहीं हुआ था, जय-पराजय का फैसला नहीं हुआ था, फिर भी जिनको यहां पहुंचने की उत्साह है.. उठो, उठो, उठो। न यहां कोई उठा सकता है, न बिठा सकता है, सवा सौ करोड़ देशवासी बिठा सकते हैं, सवा सौ करोड़ देशवासी उठा सकते हैं।

लोकतंत्र में जनता पर भरोसा होना चाहिए, इतनी जल्दबाजी क्या है?... और अहंकार ही है जो कहता है कि हम खड़े होंगे, प्रधानमंत्री 15 मिनट तक खड़े नहीं हो पाएंगे।

आदरणीय अध्यक्ष महोदया जी, मैं खड़ा भी हूँ और चार साल जो हमने काम किये हैं उस पर अड़ा भी हूँ। हमारी सोच उनसे अलग है। हमने तो सीखा है सार-सार को गहि रहै, थोथा देई उड़ाय। खैर मैं सार ग्रहण करने के लिए काफी कोशिश कर रहा था, लेकिन आज मिला नहीं सार। डंके की चोट पर अहंकार यह कहलाता है 2019 में पावर में आने नहीं देंगे, जो लोगों में विश्वास नहीं करते और खुद को ही भाग्यविधाता मानते हैं उनके मुंह से ऐसे शब्द निकलते हैं।

लोकतंत्र में जनता जनार्दन भाग्यविधाता होती है लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं पर भरोसा होना जरूरी है। अगर 2019 में कांग्रेस सबसे बड़ा दल बनती है, तो मैं बनूंगा प्रधानमंत्री, लेकिन दूसरो की ढेर सारी ख्वाहिश है उनका क्या होगा? इस बारे में confusion है। अध्यक्ष महोदया जी, यह सरकार का floor test नहीं है, यह तो कांग्रेस का अपने तथाकथित साथियों का floor test है। मैं ही प्रधानमंत्री बनूंगा के सपने पर और 10-20 थोड़े मोहर लगा दें, इसके लिए trial चल रहा है। इस प्रस्ताव के बहाने अपने कुनबे को जो जमाने की कोशिश की है, कहीं बिखर न जाए इसकी चिंता पड़ी है। एक मोदी को हटाने के लिए, जिसके साथ कभी देखने का संबंध नहीं, मिलने का संबंध नहीं, ऐसी धाराओं को इकट्ठा करने का प्रयास हो रहा है।

मेरी कांग्रेस के साथियों को सलाह है कि जब भी अगर आपको अपने संभावित साथियों की परीक्षा लेनी है तो जरूर लीजिए, लेकिन कम से कम अविश्वास प्रस्ताव का तो बहाना न बनाइये। जितना विश्वास वो सरकार पर करती है कम से कम उतना विश्वास अपने संभावित साथियों पर तो करिये। हम यहां इसलिए हैं कि हमारे पास संख्याबद्ध है, हम यहां इसलिए हैं कि सवा सौ करोड़ देशवासियों का हमें आशीर्वाद है। अपनी स्वार्थसिद्धी के लिए देश के मन पर, देशवासियों के दिये आशीर्वाद पर कम से कम अविश्वास न करे। बिना पुष्टिकरण किये, बिना वोट बैंक की राजनीति किये, सबका साथ, सबका विकास, यह मंत्र पर हम काम करते रहे हैं। पिछले चार वर्ष में उस वर्ग और क्षेत्र में काम जिसके पास चमक-धमक नहीं। पहले भी 18 हजार गांव में बिजली पहुंचाने का काम पहले भी सरकारें कर सकती थी, लेकिन अध्यक्ष महोदया इन 18 हजार गांवों में 15 हजार गांव पूर्वी भारत के और उन 15 हजार में भी 5 हजार गांव पूरी तरह नॉर्थ ईस्ट से आप कल्पना कर सकते हैं, इन इलाकों में कौन रहता है। हमारे आदिवासी, हमारे गरीब ये महानुभाव ही रहते हैं। दलित, पीड़ित हो, शोषित हो, वंचित हो, जंगलों में जिंदगी गुजारने वालों हो, इनका बहुत बड़ा तबका रहता है, लेकिन ये लोग ये क्यों नहीं करते थे, क्योंकि यह उनके वोट के गणित में फिट नहीं होता था। और उनका इस आबादी पर विश्वास नहीं था, उसी के कारण नॉर्थ ईस्ट को अलग-थलग कर दिया गया। हमने सिर्फ इन गांवों में बिजली पहुंचाई ऐसा नहीं, अपने कनेक्टिविटी के हर मार्ग पर तेज गति से काम किया।

बैंक के दरवाजें... गरीबों के नाम पर बैंकों का राष्ट्रीयकरण हुआ, लेकिन बैंक के दरवाजें गरीबों के लिए नहीं खुले। जब उनकी सरकारें थी, इतने साल बैठे थे, वे भी गरीबों के लिए बैंक के दरवाजें खोल सकते थे। लगभग 32 करोड़ जनधन खाते खोलने का काम हमारी सरकार ने किया। और आज 80 हजार करोड़ रुपया इन गरीबों ने बचत करके इन जनधन अकाउंट में जमा किये हैं। माताओं और बहनों के लिए, उनके सम्मान के लिए 8 करोड़ शौचालय बनाने का काम इस सरकार ने किया है। यह पहले की सरकार भी कर सकती थी। 'उज्जवला योजना' से साढ़े चार करोड़ गरीब माताओं-बहनों को आज धुआं मुक्त जिंदगी और बेहतर स्वास्थ्य का काम, यह विश्वास जगाने का काम हमारी सरकार ने किया है। ये वो लोग थे जो 9 सिलेंडरों के 12 सिलेंडर इसी की चर्चा में खोये हुए थे। उनके अविश्वास के बीच वो जतना को भटका रहे थे। एक अंतर्राष्ट्रीय रिपोर्ट के अनुसार बीते दो वर्षों में पांच करोड़ देशवासी भीषण गरीबी से बाहर आए, 20 करोड़ गरीबों को मात्र 90 पैसे प्रतिदिन और एक रुपये महीने के प्रीमियम पर

बीमा का सुरक्षा कवच भी मिला। आने वाले दिनों में 'आयुष्मान भारत योजना' के तहत पांच लाख रुपयों का बीमारी में मदद करने का insurance इस सरकार ने दिया है। इनको इन बातों पर भी विश्वास नहीं है। हम किसानों की आय 2022 तक दोगुना करने तक की दिशा में एक के बाद एक कदम उठा रहे हैं। उस पर भी इनको विश्वास नहीं। हम बीज से लेकर बाजार तक संपूर्ण व्यवस्था के अंदर सुधार कर रहे हैं सीमलेस व्यवस्थाएं बना रहे हैं, इस पर भी उनको विश्वास नहीं है। 80 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा खर्च करके बरसों से अटकी हुई 99 सिंचाई योजनाओं को उन परियोजनाओं को पूरा करने का काम चल रहा है, कुछ परियोजनाएं पूर्णतः पर पहुंच चुकी हैं, कुछ का लोकार्पण हो चुका है, लेकिन इस पर भी इनका विश्वास नहीं है। हमने 15 करोड़ किसानों को Soil Health Card पहुंचाया, आधुनिक खेती की तरफ किसानों को ले गए। लेकिन इस पर भी इनका विश्वास नहीं है। हमने यूरिया में neem coating, उन्होंने थोड़ा करके छोड़ दिया, शत-प्रतिशत किये बिना उसका लाभ नहीं मिल सकता है। हमने शत-प्रतिशत neem coating का काम किया, जिसका लाभ देश के किसानों को हुआ है। यूरिया की जो कमी महसूस होती थी, वो बंद हुई है और इस पर भी इनका विश्वास नहीं है। न सिर्फ प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के माध्यम से किसानों को विश्वास दिलाने का काम किया, न सिर्फ premium कम किया, लेकिन insurance का दायरा भी हमने बढ़ाया। उदाहरण के तौर पर 2016-17 में किसानों ने करीब 1300 करोड़ रुपये बीमा के प्रीमियम के रूप में दिया, जबकि उन्हें सहायता के रूप में 5500 करोड़ रुपये से ज्यादा की claim राशि दी गई, यानि किसानों से जितना लिया गया, उससे तीन गुना ज्यादा claim राशि उनको हम पहुंचा दिये, लेकिन इन लोगों को विश्वास नहीं होता है।

माननीय अध्यक्ष महोदया एलईडी बल्ब... जरा बताये तो सही कि क्या कारण है कि उनके कालखंड में एलईडी बल्ब साढ़े तीन सौ, चार सौ, साढ़े चार सौ रुपये में बिकता था। आज वो एलईडी बल्ब 40-45 रुपये में पहुंच गया। और 100 करोड़ एलईडी बल्ब आज बिक चुके हैं। इतना ही नहीं, पांच सौ से ज्यादा urban bodies में 62 लाख से ज्यादा एलईडी बल्ब स्ट्रीट लाइट में लग चुके हैं और उसके कारण उन नगरपालिकाओं के खर्च में भी बचत हुई है। उनके समय में मोबाइल मैन्युफैक्चरिंग कंपनियां दो थी, आज मोबाइल फोन बनाने वाली 120 कंपनियां हैं, लेकिन उनका विश्वास काम नहीं कर रहा। युवाओं के स्वरोजगार के लिए पहले पढ़े-लिखे नौजवानों को certificate पकड़ा दिया जाता था। वो रोजी-रोटी के लिए भटकता था, हमने मुद्रा योजना के तहत 13 करोड़ नौजवानों को लोन देने का काम किया है। इतना ही नहीं, वक्त बदल चुका है। आज 10 हजार से ज्यादा स्टार्टअप हमारे देश के नौजवान चला रहे हैं और देश को Innovative India की तरफ ले जाने का काम कर रहे हैं। एक समय था जब हम डिजिटल लेन-देन की बात करने के लिए तो यही सदन में बड़े-बड़े विद्वान लोग कहने लगे, हमारा देश तो अनपढ़ है, डिजिटल ट्रांजेक्शन कैसे कर सकता है, हमारे देश के गरीब को तो यह कैसे पहुंच सकता है?

अध्यक्ष महोदया जी, जो लोग इस प्रकार से देश की जनता की ताकत को कम आंकते थे, उनको जतना ने करारा जवाब दिया है। अकेले भीम ऐप और मोबाइल फोन से एक महीने में 41 thousand crore रुपये का ट्रांजेक्शन यह हमारे देश के नागरिक आज कर रहे हैं। लेकिन उनका देश की जनता पर विश्वास नहीं है, अनपढ़ है, यह नहीं करेंगे, वो नहीं करेंगे, यही मानसिकता का परिणाम है।

अध्यक्ष महोदया जी, Ease of doing business में 42 अंक में सुधार हुआ, इनको उस पर भी शक होने लगा है। उन संस्थाओं पर भी अविश्वास करने लगे हैं। Global Competitive Index में 31 अंक का सुधार हुआ है, उसमें भी इनको शक हो रहा है। innovation index में 24 अंक में सुधार हुआ है। Ease of doing business को बढ़ाकर सरकार cost of doing business को कम कर रही है। मेक

इन इंडिया हो या जीएसटी इन पर भी इनका विश्वास नहीं है। भारत ने अपने साथ ही पूरी दुनिया की economic growth को मजबूती दी है। बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में सबसे तेज गति से विकसित होने वाली अर्थव्यवस्था भारत छठे नंबर की अर्थव्यवस्था है। और यह जयकारा सरकार में बैठे हुए लोगों का नहीं है। सवा सौ करोड़ हिन्दुस्तानियों के पुरुषार्थ का है। अरे इसके लिए तो गौरव करना सीखो। लेकिन वो भी गौरव करना नहीं जानते हैं।

5 trillion डॉलर की economy बनने की दिशा में आज तेज गति से आगे बढ़ रहा है। हमने कालेधन के खिलाफ लड़ाई छेड़ी है और यह लड़ाई रुकने वाली नहीं है। और मैं जानता हूँ इसके कारण कैसे-कैसे लोगों को परेशानी हो रही है। वो गांव अभी भी उनके भर नहीं रहे हैं, यह तो आपके व्यवहार से हमें पता चलता है। हमने टेक्नोलॉजी का उपयोग किया। और टेक्नोलॉजी के माध्यम से सरकारी खजाने के रुपये, जो कहीं और चले जाते थे उसमें 90 हजार करोड़ रुपये बचाने का काम टेक्नोलॉजी के माध्यम से किया है। गलत हाथों में जाता है, किस प्रकार चलता था, देश भलिभांति जानता है। ढाई लाख से ज्यादा shell कंपनियां उसको हमने ताले लगा दिए। और भी करीब दो लाख, सवा दो लाख कंपनियां आज भी नजर में हैं, कभी भी उन पर ताला लगने की संभावना हो सकती है। क्योंकि इसको पनपाया किसने, कौन ताकतें थी जो इसको बढ़ावा देती थी और इन व्यवस्थाओं के माध्यम से अपने खेल खेले जा रहे थे। बेनामी संपत्ति का कानून सदन ने पारित किया। 20 साल तक notify नहीं किया गया, क्यों? किसको बचाना चाहते थे? और हमने आ करके इस काम को भी किया और मुझे खुशी है अब तक चार, साढ़े चार हजार करोड़ रुपये की संपत्ति इस बेनामी संपत्ति की तरह जब्त कर दी गई है। देश को विश्वास है, दुनिया को विश्वास है, दुनिया की सर्वश्रेष्ठ संस्थाओं को विश्वास है, लेकिन जो खुद पर विश्वास नहीं कर सकते, वो हम पर विश्वास कैसे कर सकेंगे।

और इस प्रकार की मानसिकता वाले लोगों के लिए हमारे शास्त्रों में बहुत अच्छे ढंग से कहा गया है। 'धारा नैव पतन्ति चातक मुखे मेघस्य किं दोषणम् यानी चातक पक्षी के मुंह में बारिश की बूंद सीधे नहीं गिरती तो इसमें बादल का क्या दोष।

अध्यक्ष महोदय, कांग्रेस को खुद पर अविश्वास है। यह अविश्वास से घिरे हुए हैं, अविश्वास ही उनकी पूरी कार्यशैली, उनकी सांस्कृतिक जीवन शैली का हिस्सा है। उनको विश्वास नहीं है, स्वच्छ भारत उसमें भी विश्वास नहीं है, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस उस पर भी विश्वास नहीं है, देश के मुख्य न्यायाधीश उन पर विश्वास नहीं, रिजर्व बैंक उन पर भी विश्वास नहीं। अर्थव्यवस्था के आंकड़े देने वाली संस्थाएं उन पर भी विश्वास नहीं है। देश के बाहर पासपोर्ट की ताकत क्या बढ़ रही है या अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर देश का गौरवगान कैसे हो रहा है उस पर भी उनको विश्वास नहीं है। चुनाव आयोग पर विश्वास नहीं, ईवीएम पर विश्वास नहीं। क्यों? क्योंकि उनको अपने ऊपर विश्वास नहीं है और यह अविश्वास क्यों बढ़ गया, जब कुछ लोग मुट्ठी भर लोग अपना ही विशेष अधिकार मानते थे, अपना ही विशेष अधिकार मानकर जो बैठे थे जब यह जनाधिकार में परिवर्तित होने लगा तो जरा वहां पर बुखार चढ़ने लगा, परेशानी होने लगी। क्योंकि जब प्रक्रियाओं को प्रभावित करने की परंपराओं को बंद किया गया तो उनको परेशानी होना बड़ा स्वाभाविक था। जब भ्रष्टाचार पर सीधा प्रहार होने लगा तो उनको परेशानी होनी बहुत स्वाभाविक थी। जब भ्रष्टाचार की कमाई आनी बंद हो गई तो उनकी बेचेनी बढ़ गई, यह भी साफ है, जब कोर्ट-कचेरी में उन्हें भी पेश होना पड़ा तो उनको भी जरा तकलीफ होने लगी।

मैं हैरान हूँ, यहां ऐसे विषयों को स्पष्ट किया गया। आजकल शिवभक्ति की बातें हो रही हैं। मैं भी भगवान शिव को प्रार्थना करता हूँ। मैं सवा सौ करोड़ देशवासियों को भी प्रार्थना करता हूँ आपको इतनी शक्ति दें, इतनी शक्ति दें कि 2024 में आप फिर से अविश्वास प्रस्ताव ले आए। मेरी आपको शुभकामनाएं हैं। यहां पर डोकलाम की चर्चा की गई। मैं मानता हूँ कि जिस विषय की जानकारी नहीं है कभी-कभी उस पर बोलने से बात उलटी पड़ जाती है। उसमें व्यक्ति का नुकसान कम है, देश का नुकसान है। और इसलिए ऐसे विषयों पर बोलने से पहले थोड़ा संभालना चाहिए। हमें घटनाक्रम जरा याद रहना चाहिए जब सारा देश, सारा तंत्र, सारी सरकार एकजुट हो करके, डोकलाम के विषय को लेकर प्रगतिशील थी, अपनी-अपनी जिम्मेदारियां संभाल रही थी, तब डोकलाम की बातें करते हुए चीन के राजदूत के साथ बैठते हैं। और बाद में कभी न तो कभी हां। जैसे फिल्मी अंदाज में चल रहा था, नाटकीय ढंग से चल रहा था। कोई कहता था मिले फिर कहता था नहीं मिले, क्यों भई? ऐसा suspense क्यों? मैं समझता हूँ.. और कांग्रेस प्रवक्ता ने तो पहले साफ मना कर दिया था कि उनके उपाध्यक्ष चीनी राजदूत को मिले ही नहीं हैं। इस बीच एक प्रेस विज्ञप्ति भी आ गई और फिर कांग्रेस को मानने के लिए मजबूर होना पड़ा हां मुलाकात तो हुई थी। क्या देश, देश के विषयों की कोई गंभीरता नहीं होती है क्या? क्या हर जगह पर बचकाना हरकत करते रहेंगे क्या?

यहां पर राफेल विवाद को छेड़ा गया। मैं कल्पना नहीं कर सकता उस सत्य को इस प्रकार से कुचलाया जा सकता है। सत्य को इस प्रकार से रोंदा जाता है। और बार-बार, चीख-चीख करके देश को गुमराह करने का काम। और इन्हीं विषयों पर, देश की सुरक्षा से जुड़े हुए विषयों पर ही इस प्रकार से खेल खेले जाते हैं। यह देश कभी माफ नहीं करेगा। यह कितना दुखद है कि इस सदन पर लगाए गए आरोप पर दोनों देश को बयान जारी करना पड़ा। मैं समझता हूँ.. और दोनों देश को खंडन करना पड़ा। क्या ऐसी बचकाना हरकत हम करते रहेंगे। कोई जिम्मेदारी है कि नहीं है। जो लोग इतने साल सत्ता में रहे.. बिना हाथ पैर के, बिना कोई सबूत बस चीखते रहो, चिल्लाते रहो। सत्य का गला घोटने की कोशिश है, देश की जनता भलिभांति जानती हैं और हर बार जनता ने आपको जवाब दिया है। और अब सुधरने का मौका है, सुधरने की कोशिश करें। यह राजनीति का स्तर देशहित में नहीं है और मैं इस सदन के माध्यम से अध्यक्ष जी, मैं देशवासियों को विश्वास दिलाना चाहता हूँ, देशवासियों को आश्वस्त करना चाहता हूँ कि यह समझौता दो देशों के बीच हुआ है। यह कोई व्यापारिक पार्टियों के साथ नहीं हुआ है। दो जिम्मेदार सरकारों के बीच में हुआ है और पूरी पारदर्शिता के साथ हुआ है। और मेरी प्रार्थना भी है कि यह राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दे पर, इतने संवेदनशील मुद्दे पर यह बचकाना बयानों से बचा जाए। यह मेरा आग्रह है।

और नामदार के आगे मैं प्रार्थना ही कर सकता हूँ। क्योंकि हमने देखा है, ऐसी मानसिक प्रवृत्ति बन चुकी है कि देश के सेनाध्यक्ष को किस भाषा का प्रयोग किया गया है। क्या देश के सेनाध्यक्ष के लिये इस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया जाएगा। आज भी हिन्दुस्तान के हर सिपाही जो सीमा पर होगा, जो निवृत्त होगा, आज उसको इतनी गहरी चोट पहुंची होगी जिसकी सदन की बैठकर हम कल्पना नहीं कर सकते। जो देश के लिये मर मिटने को तैयार रहते हैं, जो देश की भलाई के लिये बात करते हैं, उस सेना की जवानों के पराक्रम को उन प्रकारों को स्वीकारने आपको सामर्थ्य नहीं होगा, लेकिन आप सर्जिकल स्ट्राइक को जुमला स्ट्राइक बोले। आप सर्जिकल स्ट्राइक को जुमला स्ट्राइक बोले। ये देश कभी माफ नहीं करेगा। आपको गालियां देनी हैं तो मोदी मौजूद हैं। आपकी सारी गालियां सुनने के लिये तैयार हैं। लेकिन देश के जवान जो मर मिटने के लिये निकले हैं, उनको गालियां देना बंद कीजिये। सर्जिकल स्ट्राइक को जुमला स्ट्राइक। इस प्रकार से सेना को अपमानित करने का काम निरंतर चलता है।



माननीय अध्यक्ष महोदया, पीढ़ी दर पीढ़ी चला आ रहा ये अविश्वास ये कांग्रेस की फितरत है। कांग्रेस ने देश में अस्थिरता फैलाने के लिये अविश्वास प्रस्ताव की सर्वैधानिक व्यवस्था का दुरुपयोग किया। हमने अखबार में पढ़ा कि अविश्वास प्रस्ताव की स्वीकृति के तुरंत बाद बयान दिया गया, कौन कहता है हमारे पास नम्बर नहीं है। ये अहंकार देखिए। मैं इस सदन को याद कराना चाहता हूँ 1999 राष्ट्रपति भवन के सामने खड़े होकर के दावा किया गया था, हमारे पास तो 272 की संख्या है और हमारे साथ और भी जुड़ने वाले हैं, 272, पूरे देश में और अटल जी की सरकार को सिर्फ एक वोट से गिरा दिया, लेकिन खुद जो 272 का दावा किया था। वो खोखला निकला और 13 महीनों में देश को चुनाव के अंदर जाना पड़ा। चुनाव थोपे गए देश पर माननीय अध्यक्ष महोदया आज फिर एक स्थिर जनादेश उसको अस्थिर करने के लिये खेल खेले जा रहे हैं। राजनीतिक अस्थिरता के दौरान अपनी स्वार्थ सिद्धि करना ये कांग्रेस की फितरत रही है। 1979 में किसान नेता माटी के लाल चौधरी चरण सिंह जी को पहले समर्थन का भ्रम दिया और फिर वापस ले लिया। एक किसान एक कामगार का इससे बड़ा अपमान क्या हो सकता है। चन्द्रशेखर जी का भी उसी तरह, *modus operandi* वही था। पहले सहयोग की रस्सी फैंको और फिर धोखे से उसे वापिस खींचो यही खेल चलता रहा। यही फॉर्मूला 1997 में फिर अपनाया गया। पहले देवगौड़ा जी को, पहले आदरणीय देवगौड़ा जी को अपमानित किया गया और फिर इंद्र कुमार गुजराल जी की बारी आई। क्या देवगौड़ा जी हो, क्या मुलायम सिंह यादव हो, कौन बोल सकता है कि कांग्रेस ने लोगों के साथ क्या किया है। जमीन से उठे अपने श्रम से लोगों के हृदय में जगह बनाने वालों के जन नेता के रूप में उभरे हुए, उन्होंने उन नेताओं को उन दलों को कांग्रेस ने छला है और बार बार देश को अस्थिरता में धकेलने का पाप किया है। कैसे कांग्रेस ने अपनी सरकार बचाने के लिये दो दो बार विश्वास को खरीदने का प्रयास किया वोट के बदले नोट ये खेल कौन नहीं जानता। आज यहां एक बात और कही गई, यहां पूछा गया प्रधानमंत्री अपनी आंख में मेरी आंख भी नहीं डाल सकते। माननीय अध्यक्ष महोदया, सही है हम कौन होते हैं जो आप की आंख में आंख डाल सकें। गरीब मां का बेटा, पिछड़ी जाति में पैदा हुआ। हम कहां आपसे आंख मिलाएंगे। आप तो नामदार हैं नामदार, हम तो कामगार हैं, आपकी आंख में आंख डालने की हिम्मत हमारी नहीं है। हम नहीं डाल सकते और इतिहास गवाह है। अध्यक्ष महोदया जी, इतिहास गवाह है। सुभाष चन्द्र बोस ने कभी आंख में आंख डालने की कोशिश की उनके साथ क्या किया। मुरारजी भाई देसाई गवाह है उन्होंने आंख में आंख डालने की कोशिश की क्या किया गया। जय प्रकाश नारायण गवाह है उन्होंने आंख में आंख डालने की कोशिश की उनके साथ क्या किया गया। चौधरी चरण सिंह उन्होंने आंख में आंख डालने की कोशिश की उनके साथ क्या किया गया। सरदार वल्लभ भाई पटेल ने आंख में आंख डालने की कोशिश की उनके साथ क्या किया गया। चन्द्र शेखर जी ने आंख में आंख डालने की कोशिश की उनके साथ क्या किया गया। अरे प्रणब मुखर्जी ने आंख में आंख डालने की कोशिश की उनके साथ क्या किया गया। अरे इतना ही नहीं हमारे शरद पवार जी ने आंख में आंख डालने की कोशिश की उनके साथ भी क्या किया गया। मैं सारा कच्चा चिट्ठा खोल सकता हूँ। ये आंख में आंख और इसलिये आंख में आंख डालने की कोशिश करने वालों को कैसे अपमानित किया जाता है। कैसे उनको ठोकर मारकर निकाला जाता है। एक परिवार का इतिहास इस देश में अनजान नहीं है और हम तो कामगार भला हम नामदार से आंख में आंख कैसे डाल सकते हैं। और आंखों की बात करने वालों की आंखों की हरकतों ने आज टीवी पर पूरा देश देख रहा है। कैसे आंख खोली जा रही है कैसे बंद की जा रही है। ये आंखों का खेल।

माननीय अध्यक्ष महोदया जी, लेकिन आंख में आंख डालकर के आज इस सत्य को कुचला गया है। बार बार कुचला गया है सत्य को बार बार रौंदा गया है। यहाँ कहा गया, कांग्रेस ही थी, जीएसटी में पेट्रोलियम क्यों नहीं लाया। मैं पूछना चाहता हूँ अपने परिवार के इतिहास के बाहर भी तो कांग्रेस का इतिहास है। अपने परिवारों के बाहर कांग्रेस सरकारों का भी इतिहास है अरे जहां इतना तो ध्यान रखो, जब यूपीए सरकार थी तब पेट्रोलियम को बाहर रखने का जीएसटी के बाहर रखने का निर्णय आपकी

सरकार ने किया था। आपको ये भी मालूम नहीं है। आज यहां ये भी बात कही गई कि आप चौकीदार नहीं भागीदार हैं। माननीय अध्यक्ष महोदया, मैं गर्व के साथ कहना चाहता हूं हम चौकीदार भी हैं, हम भागीदार भी हैं, लेकिन हम आपकी तरह सौदागर नहीं हैं, ठेकेदार नहीं हैं। न हम सौदागर हैं, न ठेकेदार हैं। हम भागीदार हैं देश के गरीबों के दुख के भागीदार हैं। हम देश के किसानों के पीड़ा के भागीदार हैं। हम भागीदार हैं देश के नौजवानों के सपनों के भागीदार हैं। हम भागीदार हैं देश के उन 115 जिले जो अंकांक्षी जिले हैं, उनके विकास के सपनों के भागीदार हैं। हम, हम देश के विकास को नई राह पर ले जाने वाले मेहनतकश मजदूरों के भागीदार हैं। हम भागीदार हैं और हम भागीदार रहेंगे। उनके दुख को बांटना ये हमारी भागीदारी है। हम निभाएंगे हम ठेकेदार नहीं हैं। हम सौदागर नहीं हैं, हम चौकीदार भी हैं हम भागीदार भी हैं। हमें गर्व है इस बात का।

कांग्रेस का एक ही मंत्र है, या तो हम रहेंगे और अगर हम नहीं हुए तो फिर देश में अस्थिरता रहेगी। अफवाहों का साम्राज्य रहेगा। ये पूरा कालखंड देख लीजिये। वहां भी भुगत भोगी बैठे हैं। वहां क्या हुआ सबको मालूम है।

अफवाहें उड़ाई जाती हैं। झूठ फैलाया जाता है। प्रचार किया जाता है। आज के इस युग में अफवाहें फैलाने के लिये टैक्नॉलॉजी भी उपलब्ध है। और आरक्षण खत्म हो जाएगा। दलितों पर अत्याचार रोकने वाला कानून खत्म कर दिया गया है। देश को हिंसा की आग में झोंकने के षड्यंत्र हो रहे हैं। अध्यक्ष महोदया जी, ये लोग राजनीति दलितों, पीड़ितों, शोषितों, वंचितों, गरीबों को इमोशनल ब्लैकमेलिंग करके राजनीति करते रहे हैं। कामगारों, किसानों उनके दुखों की चिंता किये बिना समस्याओं के समाधान के रास्ते खोजने की बजाय चुनाव जीतने के शॉर्टकट ढूंढने का प्रयास हो रहे थे। और उसीका कारण है कि देश का बहुत बड़ा तबका सशक्तिकरण से वंचित रह गया है। बार बार बाबा साहेब आम्बेडकर की भाषा उनके पहनावे पर उनकी राजनीति पर मजाक उड़ाने वाले लोग, आज बाबा साहेब के गीत गाने लगे हैं। धारा 356 का बार बार दुरुपयोग करने वाले हमें लोकतंत्र के पाठ पढ़ाने की बातें करते हैं। जो सरकार, जो मुख्यमंत्री पसंद नहीं आता था उसको हटाना अस्थिरता पैदा करना ये खेल देश आजाद होने के तुरंत बाद शुरू कर दिया गया जो कभी भी मौका नहीं छोड़ा गया है। और इसी नीति का परिणाम 1980, 1991, 1998, 1999 देश को समय से पहले चुनाव के लिये घसीटा गया। चुनाव में जाना पड़ा। एक परिवार के सपनों, आकांक्षाओं के सामने जो भी आया उसके साथ यही बर्ताव किया गया। चाहे देश के लोकतंत्र को ही दाँव पर क्यों न लगाना पड़े स्वाभाविक है जिनकी ये मानसिकता पड़ी है, जिनके अंदर इतना अहंकार भरा हो, वो हम लोगों को कैसे स्वीकार कर सकते हैं। हमारा यहां बैठना उनको कैसे गवारा हो सकता है। ये हम भलीभांति समझते हैं। और इसलिये हमको नापसंद करना बहुत स्वाभाविक है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, कांग्रेस पार्टी जमीन से कट चुकी है। वो तो डूबे हैं लेकिन उनके साथ जाने वाले भी 'हम तो डूबे हैं सनम तुम भी डूबोगे।' लेकिन मैं अर्थ और अनर्थ में हमेशा उलझे हुए अपने आपको बहुत बड़ा विद्वान मानने वाले और विद्वता को जिनको अहंकार है। और वो हर समय उलझे हुए एक व्यक्ति ने बात बताई थी उन्हीं के शब्दों को मैं कोट करना चाहिए।

“कांग्रेस पार्टी अलग अलग राज्यों में क्यों और कैसे कमजोर हो गई है। मैं एक ऐसे राज्य से आता हूँ जहां इस पार्टी का प्रभुत्व समाप्त हो गया है। क्यों कांग्रेस इस बात को समझ नहीं पाई कि सत्ता अब उच्च वर्ग साधन सम्पन्न वर्गों से गांव देहात के लोगों इंटरमीडियेट कास्ट और यहां तक की ऐसी

जातियों को कथित सोशल ऑर्डर में सबसे नीचे है। गरीब बेरोजगार जिनके पास संपत्ति नहीं, जिनकी कोई आमदनी नहीं, जिनकी आवाज आज तक सुनी नहीं गई, उन तक पहुंची है। जैसे जैसे पावर नीचे की तरफ चलती गई। जैसा कि लोकतंत्र में होना चाहिए। वैसे वैसे अनेक राज्यों में कांग्रेस का प्रभाव खत्म होता गया। ये इनपुट quotable quote है। और ये हैं 11 अप्रैल, 1997 का और देवगौड़ा जी की सरकार का जो विश्वास प्रस्ताव चल रहा था। उस समय अर्थ और अनर्थ में उलझे हुए आपके विद्वान महारथी श्रीमान चिदंबरम जी का ये वाक्य है। कुछ विद्वान लोगों को ये बातें शायद वहां लोगों को समझ नहीं आई होगी।

18 साल पहले अटल बिहारी वाजपेयी जी की सरकार ने तीन राज्यों का गठन किया। उत्तराखंड, झारखंड, छत्तीसगढ़ कोई खींचातानी न कोई झगड़ा, मिल बैठकर के जो जहां से निकले उनके साथ बैठ कर के रास्ते निकाले और तीनों राज्य बहुत शांति से प्रगति कर रहे हैं और देश के विकास में योगदान दे रहे हैं। लेकिन राजनीतिक लाभ पाने के लिये आंध्र के लोगों को विश्वास में लिये बिना राज्यसभा के दरवाजों को बंद करके जोर और जुल्म के बीच हाऊस ऑर्डर में नहीं था तो भी आपने आंध्र और तेलंगाना का विभाजन किया। उस समय मैंने ये कहा था, उस समय मैंने कहा था तेलुगु हमारी मां है, उस समय हमने कहा था तेलुगु हमारी मां है, तेलुगु का spirit को टूटना नहीं चाहिए। उन्होंने बच्चे को बचा लिया मां को मार दिया है। हम सबका दायित्व है की तेलुगु के इस spirit को बचा लिया जाए। ये शब्द मेरे उस समय थे और आज भी मैं मानता हूं लेकिन 2014 में और आपका तो क्या हाल हुआ। आपको लगता था एक जाएगा तो जाएगा लेकिन दूसरा मिल जायेगा। लेकिन जितना जनता इतनी समझदार थी न ये भी मिला न वो भी मिला और आप पीछे ये मुसीबत छोड़कर चले गए। और आपके लिये ये नया नहीं आपने भारत पाकिस्तान का विभाजन किया आज भी मुसीबतें झेल रहे हैं। आपने इनका भी विभाजन ऐसे किया है। उनको विश्वास दिलाया होता तो शायद ये मुसीबत ना आती। लेकिन कुछ नहीं सोचा और मुझे बराबर याद है चन्द्र बाबू का और वहां के हमारे तेलंगाना के सीएम का। केसीआर का पहले साल बंटवारे को लेकर के तनाव रहता था, झगड़े होते थे गवर्नर को बैठना पड़ता था होम मिनिस्टर को बैठना पड़ता था मुझे बैठना पड़ता था। और उस समय टीडीपी की पूरी ताकत तेलंगाना के खिलाफ लगाए रखते थे। उसी में लड़ते थे। हम उनको शांत करने की बहुत कोशिश करते थे। संभालने की कोशिश करते थे। और टीआरएस ने मैच्योरिटी दिखाई, वो अपने आप विकास में लग गये। उधर क्या हाल हुआ आप जानते हैं। संसाधनों का विवाद आज भी चल रहा है। बंटवारा ऐसा किया आप लोगों ने संसाधनों का विवाद आज भी चल रहा है। एनडीए की सरकार ने सुनिश्चित किया कि आंध्रप्रदेश और तेलंगाना के विकास में कोई कमी नहीं आएगी। और हम पूरी तरह उसपर कमिटेड हैं। और हमने जो कदम उठाए मुझे कुछ मीडिया रिपोर्ट याद है। कुछ मीडिया रिपोर्ट मुझे याद आ रही हैं। इसी सदन के एक माननीय सदस्य उन्होंने बयान दिया था TDP के। उन्होंने बयान दिया था Special Category Status से कहीं ज्यादा बेहतर Special package है। ये लोगों ने दिया था। वित्त आयोग की सिफारिश को फिर से दौहराना चाहता हूं। वित्त सिफारिश के तहत आयोग ने Special or General Category राज्यों के भेद को समाप्त कर दिया। आयोग ने एक नई Category North Eastern को और हिल स्टेट की बना दी। इस प्रक्रिया में आयोग ने इस बात का भी ध्यान रखा कि अन्य राज्यों को आर्थिक नुकसान न हो। एनडीए सरकार आंध्र प्रदेश के लोगों की आशा, आकांक्षाओं का सम्मान करती है। एनडीए सरकार आंध्र प्रदेश के लोगों की आशाओं, अपेक्षाओं का सम्मान करती है। लेकिन साथ ही साथ हमें ये भी ध्यान रखना होगा कि सरकार 14वीं वित्त आयोग द्वारा दी गई सिफारिशों से बंधी हुई है। इसलिये आंध्रप्रदेश राज्य के लिये एक नया Special Assistance Package बनाया गया। जिससे राज्य को उतनी वित्तीय सहायता मिले जितनी उसे Special Category Status मिलने से प्राप्त होती है। इस निर्णय को 8 सितम्बर 2016 को लागू किया गया। 4 नवम्बर 2016 को आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री ने स्वयं इस पैकेज को स्वीकार करते हुए वित्त मंत्री का धन्यवाद किया। एनडीए सरकार

आंध्र प्रदेश Re-Organization Act or Special Assistance Package पर किये हुए हर Commitment को पूरा करना चाहती थी। लेकिन टीडीपी ने अपनी विफलताओं को छुपाने के लिये u turn किया। और माननीय अध्यक्ष महोदया जी, टीडीपी ने जब एनडीए छोड़ने का तय किया तो मैंने चन्द्र बाबू से फोन किया था। टीडीपी एनडीए से निकले चन्द्र बाबू से मेरी फोन पर बात हुई। और मैंने चन्द्र बाबू से कहा था कि बाबू आप वाईएसआर के जाल में फंस रहे हो। वाईएसआर के चक्र में आप फंस रहे हो। और मैंने कहा आप वहां की स्पर्धा में, आप वहां की स्पर्धा में आप किसी भी हालत में आप बच नहीं पाओगे। ये मैंने एक दिन उनको कहा था। और मैं देख रहा हूं। झगड़ा उनका वहां का है। उपयोग सदन का किया जा रहा है। आंध्र प्रदेश की जनता भी इस घनघोर अवसरवादिता को देख रही है। चुनाव नजदीक आते गए, प्रशंसा आलोचना में बदल गई। कोई भी विशेष incentive या Package देते हैं तो उसका प्रभाव दूसरे क्षेत्रों पर भी पड़ता है। और इसी सदन में आप भी जरा सुन लीजिए। इसी सदन में तीन साल पहले श्रीमान वीरप्पा मोइली जी ने कहा था। How you can create this kind of inequality and inequity between one state and the other state. It is a major issue after all you are an arbitrator. ये बात मोइली जी ने कही थी।

और मैं आज इस सदन के माध्यम से आंध्र के लोगों को विश्वास दिलाना चाहता हूं। मैं आंध्र की जनता को विश्वास दिलाना चाहता हूं। चाहे राजधानी का काम हो चाहे कसानों की भलाई का काम हो केन्द्र सरकार एनडीए की सरकार आंध्र की जनता की कल्याण के काम में कोई पीछे नहीं रहेगी। उनकी जो मदद कर सकते हैं हम करते रहेंगे। आंध्र का भला हो उसी में देश का भला हो। ये हमारी सोच है। हम विकास में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। हमारा प्रयास हमारा काम करने का तरीका समस्याओं को सुलझाने का है। वन रैंक वन पेंशन कौन थे जिन्होंने इतने दशकों तक इसको लटकाए रखा था। जीएसटी का विषय इतने वर्षों तक किसने लटका के रखा था। और आज यहां बताया गया कि गुजरात के मुख्यमंत्री ने रोका था। मैं इस सदन को जानकारी देना चाहता हूं। उस समय के जो कर्ता धर्ता थे उनको भी मालूम है। मेरी मुख्यमंत्री के नाते चिट्ठियां भी मौजूद हैं। मैं ने उस समय भारत सरकार को कहा था जीएसटी में राज्यों के जो कनसर्न हैं इसको एड्रेस किये बिना आज जीएसटी को आगे नहीं बढ़ा पाएंगे। आप राज्यों ने जो genuine मुद्दे उठाए हैं राज्यों के साथ बैठ कर के उनका समाधान किये। लेकिन इनका अहंकार इतना था कि वे राज्यों की एक बात सुनने को तैयार नहीं थे। और उसी का कारण था और ये भी मैं आज रहस्य खोलता हूं। बीजेपी के सिवाए अन्य दलों के मुख्यमंत्री भी कांग्रेस के भी मुख्यमंत्री मुझे मिलते थे मीटिंगों में वो कहते थे हम तो बोल नहीं पाएंगे मोदी जी आप बोलिए हमारे राज्य का भी कुछ भला हो जाएगा। और मैंने आवाज उठाई थी। और जब प्रधानमंत्री बना तो मेरा मुख्यमंत्री का अनुभव काम आया। और मुख्यमंत्र के उस अनुभव के कारण सभी राज्यों के कनसर्न को एड्रेस करना तय किया। सभी राज्यों को onboard लाने में सफल हुए और तब जाकर के जीएसटी हुआ है। अगर आपका अहंकार न होता आपने राज्यों की समस्याओं को समझा होता तो जीएसटी पांच साल पहले आ जाता। लेकिन आपके काम का तरीका लटकाने का रहा है।

काले धन पर सुप्रीम कोर्ट ने एसआईटी बनाने को कहा था। कौन लटका कर बैठा था ये आप लोगों ने लटकाया था। बेनामी संपत्ति कानून किसने लटका कर के रखा था। एनडीए सरकार द्वारा खरीफ की फसल में किसानों को न्यूनतम समर्थन मूल्य एमएसपी की लागत डेढ़ सौ प्रतिशत करने का ऐतिहासिक निर्णय लिया गया। ये रोका था किसने अरे आपके पास तो ये रिपोर्ट 2006 से पड़ी थी। और आप 2014 तक सरकार में थे। आठ साल तक आपको रिपोर्ट याद नहीं आई। हमने निर्णय किया था हम किसानों को एमएसपी डेढ़ गुना करके देंगे। हमने किया। और जब यूपीए सरकार 2007 में राष्ट्रीय कृषि

नीति का ऐलान किया, तो उसमें 50 प्रतिशत वाली बात को खा गए, उसको गायब कर दिया गया। इसके आगे भी सात साल कांग्रेस की सरकार रही। लेकिन एमएसपी सिर्फ बातें करते रहे। और जनता को किसानों को झूठा विश्वास देते रहे।

मैं आज एक और बात भी बताना चाहता हूँ। देश के लिये ये जानकारी बहुत महत्वपूर्ण है। जिनको सुनना नहीं है उनके काम ये आने वाली नहीं है, लेकिन देश के लिये जरूरी है। हम 2014 में आए। तब कई लोगों ने हमको कहा था कि इकोनॉमी पर व्हाइट पेपर लाया जाए। ये हमारे मन में भी था व्हाइट पेपर लाएंगे। लेकिन जब हम बैठे और शुरू में सारी जानकारियां पाने लगे, एक के बाद एक ऐसी जानकारी आई हम चौंक गए। क्या अर्थव्यवस्था की क्या स्थिति पैदा करके रहेगी। और इसलिये मैं आज कहानी सुनाना चाहता हूँ। क्या परिस्थिति पैदा की। ये कहानी की शुरुआत हुई 2008 में और 2009 में चुनाव था। कांग्रेस को लगने लगा था कि अब एक साल बचा है। जितनी बैंकें खाली कर सकते हो करो एक बार जब आदत लग गई तो फिर बैंकों का अंडरग्राउंड लूट 2009 से 2014 तक चलता रहा। जब तक कांग्रेस सत्ता में थी तब तक ये बैंकों को लूटने का खेल चलता रहा। एक आंकड़ा इस सदन के लोगों को भी चौंका देगा आजादी के साठ साल बाद माननीय अध्यक्ष जी, आजादी के साठ साल में, साठ साल में हमारे देश के बैंकों ने लोन के रूप में जो राशि दी थी, वो 18 लाख करोड़ थी। साठ साल में 18 लाख करोड़ लेकिन 2008 से 2014 छह साल में ये राशि 18 लाख करोड़ से 52 लाख करोड़ हो गई। साठ साल में 18 लाख... छह साल में 52 लाख पहुंचाई। और ये छह साल में साठ साल में जो हुआ था। उसको डबल कर दिया। ये कैसे हुआ दुनिया में इन्टरनेट बैंकिंग तो बहुत देर से आया। लेकिन कांग्रेस के लोग बुद्धिमान लोग हैं। कांग्रेस के लोग बुद्धिमान हैं कि दुनिया में इन्टरनेट बैंकिंग आने से पहले भारत में फोन बैंकिंग शुरू हुआ। ये टेलीफोन बैंकिंग शुरू हुआ। और टेलीफोन बैंकिंग का ही कमाल था कि छह साल में 18 लाख से 52 लाख अपने चहेते लोगों को खजाना लुटा दिया गया बैंकों से। और तरीका क्या था कागज देखना कुछ नहीं टेलीफोन आया लोन दे दो, लोन देने का समय आया उसके लिये दूसरी लोन दे दो। वो लोन देने का समय आया दूसरी लोन दे दो। जो गया सो गया जमा करने के लिये नई लोन दे कर चलो यही कुचक्र चलता गया। और देश और देश की बैंक NPA की विशाल जंजाल में फंस गया। ये NPA का जंजाल एक तरह से भारत की बैंकिंग व्यवस्था के लिये एक landmine की तरह बिछाया गया। हमने पूरी पारदर्शिता से जांच शुरू की। NPA की सही स्थिति क्या है। इसके लिये मैकेनिज़्म शुरू किया। हमने इसमें इतना बारीकी से गये कि NPA का जंजाल गहराता गया निरंतर गहराता गया। NPA बढ़ने का एक और कारण यूपीए सरकार ने कुछ ऐसे निर्णय लिये जिसके कारण देश में कैपिटल गुड्स में इम्पोर्ट में बेतहाशा वृद्धि हुई। आपको ये जानकर के हैरानी होगी कि कैपिटल गुड्स का इम्पोर्ट कस्टम ड्यूटी को कम करके इतना ज्यादा बढ़ाया गया कि हमारे कच्चे तेल के आयात के समतुल्य हो गया। इन सारे इम्पोर्ट की फाईनेंसिंग बैंकों के लोन के जरिये की गई। देश में कैपिटल गुड्स उत्पादन पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। बैंकों की लेंडिंग के बिना प्रोजेक्ट अस्सेसमेंट के बिना क्लियरेंस ले ली गई। यहां तक की बहुत सारे प्रोजेक्ट में तो Equity के बदले लोन भी बैंकों ने दिया। अब एक तरफ तो इन कैपिटल गुड्स के आयात और प्रोजेक्ट के निर्माण में कस्टम ड्यूटी या सरकार के टैक्स में कमी की गई। वहीं दूसरी तरफ सरकारी क्लियरेंस देने के लिये कुछ नये टैक्स लॉ बनाए गए। जो टैक्स सरकार के खाते में नहीं जाते थे। इस टैक्स के कारण सारे प्रोजेक्ट क्लियरेंस में देरी हुई। बैंकों के लोन फंसे रहे। और NPA बढ़ता रहा। आज भी जब बार बार NPA की स्थिति के ऊपर अपने बयान देते हैं, तो सरकार को बाध्य हो कर के देश की जनता के सामने इस सदन के माध्यम से मुझे तथ्य फिर से रखने की जरूरत पड़ी है। एक तरफ तो हमारी सरकार ने बैंकों की books में इन सभी NPA को ईमानदारी के साथ दिखाने का निर्णय लिया। वहीं दूसरी तरफ हमने बैंक में सुधार के लिये बहुत सारे नीतिगत निर्णय लिये। जो देश की अर्थव्यवस्था को आने वाले वर्षों में मदद पहुंचाएंगे। पचास करोड़ रुपये से ज्यादा सारे NPA अकाउंट की समीक्षा की गई है। इनमें विलफुल



डिफॉल्टर्स और फ्रॉड की संभावना का आंकलन किया जा रहा है। बैंकों में स्ट्रेस असेट्स की मैनेजमेंट के लिये एक नई व्यवस्था तैयार की गई है। दो लाख दस हजार करोड़ रुपये से ज्यादा की राशि बैंकों के रिकैपिटलाइजेशन के लिये दी जा रही है। हमारी सरकार ने इनसोल्वेंसी और बैंकक्रप्सी कोड बनाए हैं। इसके द्वारा top twelve डिफॉल्टर्स जो की कुल NPA के 25 प्रतिशत के बराबर हैं। ये केस national company law tribunal द्वारा किये जा चुके हैं। इन 12 बड़े केस में लगभग तीन लाख करोड़ रुपये की राशि फंसी हुई है। सिर्फ एक साल में इनमें से तीन बड़े मामलों में हमारी सरकार ने लगभग 55 प्रतिशत की रिकवरी पाई है। वहीं अगर कुल 12 बड़े मामलों की बात करें तो उनमें से लगभग 45 प्रतिशत की रिकवरी की जा चुकी है। ऐसे ही लोगों के लिये कल ही लोकसभा ने Fugitive economic offender bill पास किया है। बैंक का कर्ज न चुकाने वालों के लिये अब देश के कानून से बचना और मुश्किल हो गया है और इससे NPA पर भी नियंत्रण लगने में भी मदद मिलेगी। अगर 2014 में एनडीए सरकार न बनती जिस तौर तरीके से कांग्रेस सरकार चला रही थी, अगर वही व्यवस्था चलती रहती, तो आज देश बहुत बड़े संकट में गुजरता होता।

मैं इस सदन के माध्यम से देश को ये बताना चाहता हूं कि पहले की सरकार देश पर स्पेशल फॉरेन करंसी नॉन रेसिडेंट डिपोजिट यानी FCNR के लगभग 32 बिलियन डॉलर्स 32 मिलियन डॉलर का कर्ज छोड़ कर के गई थी। इस कर्ज को भी भारत पूरी तरह आज वापस कर चुकी है। ये काम हमने कर दिया है।

माननीय अध्यक्ष महोदया, देश में ग्राम स्वराज अभियान इसको आगे बढ़ाने के लिये महत्मा गांधी के सपनों को साकार करने के लिये हमने 15 अगस्त तक 65 हजार गांवों के सभी के पास बैंक खाता हो, गैस कनेक्शन हो, हर घर में बिजली हो, सभी का टीकाकरण हुआ हो, सभी को बीमा का सुरक्षा कवच मिला हो और हर घर में एलईडी बल्ब हो, ये गांव कुल 115 जिलों में है। जिनको गलत नीतियों ने पिछड़ेपन का अविश्वास दिया और हमने उनको आकांक्षा का नया विश्वास दिया। न्यू इंडिया की व्यवस्थाएं स्मार्ट भी हैं, सेंस्टिव भी हैं। स्कूलों में लैब के ठिकाने नहीं थे, हमने अटल टिकरिंग लैब, स्किल इंडिया, खेलो इंडिया अभियानों से प्रतिभा की पहचान और सम्मान बढ़ा दिया है। महिलाओं के लिये जीवन के हर पड़ाव को ध्यान में रखते हुए योजनाएं बनाई और मैं आज गर्व के साथ कहना चाहता हूं। कैबिनेट कमिटी ऑन सिक्योरिटी में पहली बार देश में दो महिलाएं बैठती हैं। और दो महिला मंत्री निर्णय में भागीदार होती हैं। महिलाओं को फाइटर पायलेट के तौर पर induct किया गया है। तीन तलाक झेल रही मुस्लिम बहनों के साथ सरकार मजबूती के साथ खड़ी है। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ जन आंदोलन बना है। अनेक जिलों में बेटियों के जन्म में बढ़ोतरी बेटियों पर अत्याचार करने वालों के लिये फांसी तक का प्रावधान लोकतांत्रिक व्यवस्था में हिंसा और अत्याचार को इजाजत नहीं दी जा सकती है। ऐसी घटनाओं में किसी एक भारतीय का भी निधन दुखद है। मानवता की मूल भावना के खिलाफ है। जहां भी ऐसी घटनाएं हो रही हैं। वहां पर राज्य सरकारें कार्रवाई कर रही हैं।

मैं आज इस सदन के माध्यम से राज्य सरकारों को फिर से आग्रह करूंगा कि जो भी ऐसी हिंसा करे उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए। देश को 21वीं सदी के देश के सपनों को पूरा करना है। भारत माला से हाईवे का जाल पूरे देश में बिछाया जा रहा है। सागर माल से पोर्ट डेवलपमेंट और पोर्टलेड डेवलपमेंट उसको बढ़ावा दिया जा रहा है। टायर टू और टायर थ्री सिटी में हवाई कनेक्टिविटी पर काम तेजी से आगे बढ़ रहा है। देश के शहरों में मेट्रो का व्यापक विस्तार हो इस पर काम चल रहा है। यह देश की हर पंचायत तक इन्टरनेट पहुंचाने के लिये तेज गति से काम हुआ है। देश इसका साक्षी है। गांव से लेकर के बड़े शहरों तक गरीब और मध्यम वर्गीय जीवन में बड़े बदलाव ला रही है। पहले की



सरकारों के मुकाबले हमारे सरकार की गति कहीं ज्यादा तेज है। चाहे सड़कों का निर्माण हो, रेलवे लाइनों का बिजलीकरण हो, देश की उत्पादन क्षमता वृद्धि करने की हो, नये शिक्षा संस्थान हो, आईआईटी, आईआईएम हो, मैडिकल सीटों की संख्या में वृद्धि हो, कर्मचारी वही है, ब्यूरोक्रेसी वही है, फाइलों का तौर तरीका वही है, लेकिन उसके बावजूद भी ये पोलिटिकल विल है। जिसके कारण देश के सामर्थ्य में नई ऊर्जा भर कर के हम आगे बढ़ रहे हैं। इस देश में रोजगार को लेकर के बहुत सारे भ्रम फैलाए जा रहे हैं। और फिर एक बार सत्य को कुचलने का प्रयास आधारहीन बातें कोई जानकारी नहीं, ऐसे ही गपोले चलाना अच्छा होगा अगर उसमें थोड़ा बारीकी से ध्यान देते तो देश के नौजवानों को निराश कर कर के राजनीति करने का पाप नहीं करते। सरकार ने सिस्टम में उपलब्ध रोजगार से संबंधित अलग अलग आंकड़ों को देश के समक्ष हर महीने प्रस्तुत करने का निर्णय किया है। संगठित क्षेत्र यानी फॉर्मल सैक्टर में रोजगार में वृद्धि का मापने का ये तरीका है, Employee Provident Fund यानी EPF में कर्मचारियों की घोषणा सितम्बर 2017 से लेकर मई 2018 इन 9 महीनों में लगभग 45 लाख नए नेट सब्सक्राइबर ईपीएफ से जुड़े हैं। इनमें से 77% 28 वर्ष से कम उम्र के हैं। फार्मल सिस्टम में न्यू पेंशन स्कीम यानी NPS में पिछले 9 महीने में 5 लाख 68 हजार से ज्यादा लोग जुड़े हैं। इस तरह ईपीएफ और NPS के दोनों आंकड़ों को मिलाकर ही पिछले नौ महीनों में फार्मल सैक्टर में 50 लाख से ज्यादा लोग रोजगार में जुड़े हैं। ये संख्या पूरे वर्ष के लिये 70 लाख से भी ज्यादा होगी। इन 70 लाख कर्मियों में ईएसआईसी के आंकड़ों को सम्मिलित नहीं किया गया है। क्योंकि इनमें अभी आधार लिंकिंग का काम चल रहा है। इसके अतिरिक्त देश में कितनी ही प्रोफेशनल बॉडीज़ हैं, जिनमें युवा प्रोफेशनल डिग्री लेकर अपने आपको रजिस्टर करते हैं और अपना काम करते हैं। उदाहरण के तौर पर डॉक्टर्स, इंजीनियर्स, आर्किटेक्ट्स, लॉयर्स, चार्टर्ड अकाउंटेंट्स, कॉस्ट अकाउंटेंट्स कंपनी, कंपनी सेक्रेटरीज, इनमें एक स्वतंत्र इनडिपेंडेंट इंस्टिट्यूट ने सर्वे किया है। और इनडिपेंडेंट इंस्टिट्यूट स्टडी कह रहा है, उन्होंने जो आंकड़े रखे हैं। उनका कहना है 2016-17 में लगभग 17000 नये चार्टर्ड अकाउंटेंट सिस्टम में जुड़े हैं। इनमें से 5000 से ज्यादा लोगों ने नई कंपनियां शुरू की हैं। अगर एक चार्टर्ड अकाउंटेंट संस्था में बीस लोगों को रोजगार मिलता है, तो इन संस्थाओं में एक लाख से ज्यादा लोगों को रोजगार मिला है। पोस्ट ग्रेजुएट डॉक्टर, डेंटल सर्जन और Ayush डॉक्टर हमारे देश में 80 हजार से ज्यादा पोस्ट ग्रेजुएट डॉक्टर, डेंटल सर्जन और Ayush के डॉक्टर शिक्षित होकर के प्रति वर्ष कॉलेज से निकलते हैं। इनमें से अगर साठ प्रतिशत भी खुद की प्रैक्टिस करें तो प्रति डॉक्टर पांच लोगों को रोजगार के अवसर मिलेंगे और ये संख्या 2 लाख 40 हजार होगी। लोयर 2017 में लगभग 80 हजार अंडर ग्रेजुएट और पोस्ट ग्रेजुएट लोयर बने इनमें से अगर 60 प्रतिशत लोगों ने अपनी प्रैक्टिस शुरू की होगी और अपने दो तीन लोगों को रोजगार दिया होगा, तो लगभग दो लाख रोजगार उन वकीलों के माध्यम से मिला है। इन तीन प्रोफेशन में ही 2017 में 6 लाख से ज्यादा लोगों को रोजगार के अवसर मिले हैं। अब अगर इनफॉर्मल सैक्टर की बात करें, तो ट्रांसपोर्ट सैक्टर में काफी लोगों को रोजगार मिलता है। पिछले वर्ष ट्रांसपोर्ट सैक्टर में सात लाख 60 हजार कामर्शियल गाड़ियों की बिक्री हुई। सात लाख 60 हजार कामर्शियल गाड़ियां अगर इसमें से 25 प्रतिशत गाड़ियां बिक्री पुरानी गाड़ियों को बदलने के लिये मानें तो पांच लाख 70 हजार गाड़ियां सामान दुलाई के लिये सड़क पर उतरी और नयी उतरीं। ऐसी एक गाड़ी पर दो लोगों को भी अगर रोजगार मिलता है, तो रोजगार पाने वालों की संख्या 11 लाख 40 हजार होती है। उसी तरह अगर हम पैसेंजर गाड़ियों की बिक्री को देखें तो ये संख्या 25 लाख 40 हजार की थी। इनमें से अगर 20 प्रतिशत गाड़ियां पुरानी गाड़ियों को बदलने की मानी जाए, तो लगभग 30 लाख गाड़ियां सड़कों पर उतरीं। इन नई गाड़ियों में अगर केवल 25 प्रतिशत भी ऐसी मानी जाए जो एक ड्राइवर को रोजगार देती है, तो वो पांच लाख से ज्यादा लोगों को रोजगार मिलेगा। उसी तरह से पिछले साल हमारे यहां 2 लाख 55 हजार ऑटो की बिक्री हुई है। इनमें से 10 प्रतिशत की बिक्री अगर पुरानी ऑटो बदलने की मानी जाए, तो लगभग दो लाख तीस हजार नये ऑटो पिछले वर्ष सड़क पर उतरे हैं। क्योंकि ऑटो दो शिफ्ट में चलते हैं, तो दो ऑटो से तीन लोगों को

रोजगार मिलता है। ऐसे में तीन लाख चालीस हजार लोगों को नए ऑटो के जरिये रोजगार मिलता है। अकेले ट्रांसपोर्ट सैक्टर को इन तीन वाहनों से पिछले एक वर्ष में बीस लाख लोगों को नये अवसर मिले हैं।

ईपीएफ, एनपीएस, प्रोफेशनल ट्रांसपोर्ट सैक्टर की अगर हम जोड़कर के देखें एक करोड़ से ज्यादा लोगों को अकेले पिछले वर्ष रोजगार मिला है। और एक इंडिपेंडेंट संस्था का सर्वे कह रहा है। मैं उस इंडिपेंडेंट इंस्टिट्यूट को कोट कर रहा हूं। ये सरकारी आंकड़े मैं नहीं बोल रहा हूं। और इसलिये मेरा आग्रह है, कि कृपा करके बिना तथ्यों के सत्य को कुचलने का प्रयास न किया जाए। देश को गुमराह करने का प्रयास न किया जाए, आज देश एक अहम पड़ाव पर है, आने वाले पांच वर्ष सवा सौ करोड़ हिन्दुस्तानियों के जिसमें 85 प्रतिशत हमारे नौजवान देश की नियत तय करने वाले हैं। न्यू इंडिया देश की नई आशाओं, आकांक्षाओं का आधार बनेगा। जहां संभावनाओं, अवसरों, स्थिरता इसका अनन्त विश्वास होगा। जहां समाज के किसी भी वर्ग, किसी भी क्षेत्र के प्रति कोई अविश्वास नहीं होगा। कोई भेदभाव नहीं होगा। इस महत्वपूर्ण समय में बदलते हुए वैश्विक परिवेश में हम सभी को साथ मिलकर के चलने की आवश्यकता है।

अध्यक्ष महोदया जी, जिन लोगों ने चर्चा में भाग लिया मैं उनका आभार व्यक्त करता हूं। मैं फिर एक बार आंध्र की जनता के कल्याण के लिये एनडीए की सरकार कोई कमी नहीं रहेगी। हिन्दुस्तान में विकास की राह पर चलने वाले हर किसी के लिये जी जान से काम करने का व्रत लेकर के हम आए हैं। मैं फिर एक बार इन सभी महानुभावों को 2024 में अविश्वास प्रस्ताव लाने का निमंत्रण देकर के मेरी बात को समाप्त करता हूं। और मैं इस अविश्वास प्रस्ताव को पूरी तरह खारिज करने के लिये इस सदन को आग्रह करता हूं। आपने मुझे समय दिया मैं आपका बहुत बहुत आभारी हूं धन्यवाद ।

\*\*\*\*\*

**अतुल तिवारी/ शाहबाज हसीबी /हिमांशु सिंह/बाल्मीकि महतो/ तारा / शौकत अली**

(रिलीज़ आईडी: 1541955) आगंतुक पटल : 57

प्रधानमंत्री कार्यालय

# संसद के केंद्रीय कक्ष में सर्वश्रेष्ठ सांसदों को पुरुस्कार वितरण समारोह के अवसर पर प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 01 AUG 2018 10:26PM by PIB Delhi

उपस्थित सभी वरिष्ठ महानुभाव।

मैं सबसे पहले सम्मान प्राप्त करने वाले इन पांचों महानुभावों को हृदय से बहुत-बहुत बधाई देता हूँ, उनका अभिनंदन करता हूँ। देश टीवी पर ये दृश्य देखता होगा और बहुत आश्चर्य अनुभव करता होगा कि आज वही सांसद हैं जो दिन में दिखाई देते हैं। और उपराष्ट्रपति जी और स्पीकर महोदया भी शायद आज सबसे ज्यादा प्रसन्न होंगे ये दृश्य देख करके कि शांत विद्यार्थी। हम आशा करते हैं कि ऐसा दृश्य, दोनों सदनों में भी उसके दर्शन करने का अवसर मिले। और हमें हमारे सांसद जो धरती से उठ करके आए हैं, जन सामान्य के सुख-दुख के साथ जुड़े हुए हैं, उनको बात करने का अवसर मिले। सरकार को उनकी बातों को प्राथमिकता देने के लिए मजबूर होना पड़े। दूर-सुदूर गांव के, जंगल की, गरीब की आवाज इन सांसदों के माध्यम से सरकार तक ऐसे पहुंचे कि सरकार को भी उन भावनाओं को समाहित करके आगे बढ़ने के लिए मजबूर करे। लेकिन दुर्भाग्य से सांसद का वो अवसर, वो सामर्थ्य, वो अपने क्षेत्र में कितनी ही तपस्या करके आया होगा, वतृत्व हो या न हो वो कतृत्व का धनी है। लेकिन शोर-बकोर, हो-हल्ला- सरकार का उससे कम से कम नुकसान होता है; देश का सबसे ज्यादा नुकसान होता है। और उन जनप्रतिनिधि का नुकसान होता है कि जो इतनी मेहनत करके, धरती से निकल करके, लोगों से जिंदगी गुजार करके आया है, जो उनके दुख-दर्द बताना चाहता है; वो बता नहीं पा रहा है। और इसलिए अगर नुकसान किसी का होता है तो जिस क्षेत्र से वो आता है, उस क्षेत्र के सामान्य मानवी का होता है। नुकसान होता है, उस सांसद का होता है और दिनभर हो-हल्ला, टीवी पर उसकी आयुष दो मिनट, पांच मिनट या 15 मिनट या एक दिनभर रहती है- परदा गिर जाता है, खेल खत्म हो जाता है। लेकिन जिसको बात करने का मौका मिलता है, सरकार की कठोर से कठोर आलोचना करने के लिए तर्क भी हों, तीखे वचन भी हों; उसके बावजूद भी वो हर शब्द इतिहास का हिस्सा बनता है, चिरंजीव बन जाता है।

अब सबका दायित्व है कि हमारे हर सांसद साथी का शब्द चिरंजीव बने। हम सबका दायित्व है हमारे शब्द सांसद के दिल से निकली हुई वो गांव-गरीब किसान की बात सरकार को कुछ करने के लिए मजबूर करे। ये स्थिति सदन में हम सब पैदा कर सकते हैं। और जितना अच्छे ढंग से पैदा करेंगे, देश को आगे ले जाने में उसकी ताकत और बढ़ेगी।

मेरा अनुभव है, कोई सांसद की बात ऐसी नहीं होती है जिसका महात्म्य न हो, जिसका मूल्य न हो। मिर्जा के दबाव के कोई तत्कालीन स्वीकार करे, न करे अलग बात है। राजनीतिक point gain करने के लिए कुछ करना पड़े न करना पड़े, वो एक अलग स्थिति है, लेकिन ये गहरी छाप छोड़ करके जाता है जो नीति-निर्धारकों के लिए कभी न कभी सोचने के लिए मजबूर करता है। और इसलिए सांसद बन करके आना, ये सामान्य बात नहीं है। सवा सौ करोड़ देशवासियों के सपने ले करके आते हैं, अपने क्षेत्र के संकल्प ले करके आते हैं, उज्ज्वल भविष्य का वादा कर-करके आते हैं। और उस काम को निभाने में जिस-जिस को अवसर मिला है, उनमें से कुछ बंधुओं को हम आज हमें सम्मानित करने का अवसर

मिला है और अपने साथ बैठने-उठने वाले साथियों का सम्मान होता हो, तब हमारा भी तो सीना चौड़ा हो जाता है। हमें भी गर्व होता है कि हम ऐसे-ऐसे वरिष्ठ साथियों के साथ, इस कालखंड में हम भी एक साथी कार्यकर्ता थे, हम भी एक साथी के सांसद थे। ये हमारे लिए भी गर्व की बात है।

मैं हृदय से आप सबको फिर से बधाई देता हूं। बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं।

आप सबका भी बहुत-बहुत धन्यवाद।

\*\*\*

AKT/SH

(रिलीज़ आईडी: 1541682) आगंतुक पटल : 157

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English , Marathi , Assamese , Tamil , Kannada

प्रधानमंत्री कार्यालय

# राज्य सभा के उप सभापति नियुक्त होने पर श्री हरिवंश को शुभकामनाएं देने के लिए प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 09 AUG 2018 3:27PM by PIB Delhi

आदरणीय सभापति जी,

मैं सबसे पहले सदन की तरफ से और मेरी तरफ से नवनिर्वाचित उपसभापति श्रीमान हरिवंश जी को हृदयपूर्वक बहुत-बहुत बधाई देता हूं। हमारे लिए खुशी की बात है कि स्वास्थ्य लाभ के बाद हमारे अरुण जी भी आज हम सबके बीच हैं। आज 9 अगस्त है। अगस्त क्रांति आजादी के आंदोलन से जुड़ा हुआ एक महत्वपूर्ण पड़ाव था और उस पड़ाव में बलिया की बहुत बड़ी भूमिका थी। 1857 से स्वतंत्रता संग्राम से लेकर के बलिया आजादी के गढ़ क्रांति के बिगुल बजाने में, जीवन न्यौछावर करने में अग्रिम पंक्ति में हैं। मंगल पांडे जी हों, चित्तु पांडे जी हों और चंद्रशेखर जी तक की परंपरा और उसी कड़ी में एक थे हरिवंश जी। जन्म तो उनका हुआ जयप्रकाश जी के गांव में और आज भी उस गांव से जुड़े हुए हैं। जयप्रकाश जी के सपनों को साकार करने के लिए जो ट्रस्ट चल रहा है उसके ट्रस्टी के रूप में भी काम कर रहे हैं। हरिवंश जी उस कलम के धनी हैं जिसने अपनी एक विशेष पहचान बनाई है और मेरे लिए ये भी खुशी है कि वह बनारस के विद्यार्थी रहे थे। उनकी शिक्षादीक्षा बनारस में हुई। और वहीं से अर्थशास्त्र से एम.ए. कर के वो आए। और रिजर्व बैंक ने उनको पसंद किया था। लेकिन उन्होंने रिजर्व बैंक को पसंद नहीं किया। लेकिन बाद में घर की परिस्थितियों के कारण वो Nationalised Bank में काम करने गए... सभापति जी आपको जानकर के खुशी होगी कि उन्होंने जीवन के दो महत्वपूर्ण साल हैदराबाद में काम किया। कभी मुम्बई, कभी हैदराबाद, कभी दिल्ली, कभी कलकत्ता लेकिन एक चकाचौंध बड़े-बड़े शहर हरिवंश जी को नहीं भाए। वो कलकत्ता चले गए थे। "रविवार" अखबार में काम करने के लिए और हम लोग जानते हैं एस पी सिंह नाम बड़ा है... टीवी की दुनिया में एक पहचान बनी थी। उनके साथ उन्होंने काम किया। और एक Trainee के रूप में, पत्रकार के रूप में धर्मवीर भारती जी के साथ काम किया। जीवन की शुरुआत वहां से की। धर्मयुद्ध के साथ जुड़ करके काम किया। दिल्ली में चंद्रशेखर जी के साथ काम किया। चंद्रशेखर जी के चहेते थे और पद की गरिमा और values के संबंध में विशेषताएं होती हैं इंसान की। चंद्रशेखर जी के साथ वो उस पद पर थे जहां उनको सब जानकारीयां थीं। चंद्रशेखर जी इस्तीफा देने वाले थे ये बात उनको पहले से पता थी। वो स्वयं एक अखबार से जुड़े थे। पत्रकारिता की दुनिया से जुड़े थे। लेकिन खुद के अखबार को कभी भनक नहीं आने दी कि चंद्रशेखरजी इस्तीफा देने वाले हैं। उन्होंने अपने पद की गरिमा को बनाते हुए वो सीक्रेट को Maintain किया था। अपने अखबार में खबर छप जाए, और अखबार की वाह-वाही हो जाए उन्होंने होने नहीं दी थी।

हरिवंश जी रविवार में गए बिहार में, तब तो संयुक्त बिहार था। बाद में झारखंड बना। वो रांची चले गए। प्रभात खबर के लिए और जब उन्होंने join किया तब उसका सर्कुलेशन सिर्फ चार सौ का था। जिसके जीवन में इतने अवसर हों बैंक में जाए तो वहां अवसर था। प्रतिभावान व्यक्तित्व था, उन्होंने अपने आपको चार सौ सर्कुलेशनवाले अखबार के साथ खपा दिया। चार दशक की पत्रकारिता यात्रा समर्थ पत्रकारिता है और वो पत्रकारिता जो समाज कारण से जुड़ी हुई है राज कारण से नहीं। मैं मानता हूं कि हरिवंश जी की नियुक्ति, ये सबसे बड़ा योगदान होगा कि वो समाज कारण पत्रकारिता के रहे और उन्होंने राज कारण वाली पत्रकारिता से अपने आपको दूर रखा। वे जनआंदोलन के रूप में अखबार को चलाते

थे। और जब परमवीर एलबर्ट एकका देश के लिए शहीद हुए थे। एक बार अखबार में खबर आई कि उनकी पत्नी बहुत बेहाल जिंदगी गुजार रही है। 20 साल पहले की बात है। हरिवंश जी ने जिम्मा लिया, हरिवंश जी ने लोगों से धन इकट्ठा किया और चार लाख रुपये इकट्ठा करके वो शहीद की पत्नी को पहुंचाएथे।

एक बार एक प्रतिष्ठित व्यक्ति को नक्सलवादी उठा गए। हरिवंश जी ने अपने अखबार के जो भी स्रोत थे उनके माध्यम से, हिम्मत के साथ नक्सलियों की बेल्ट में चले गए थे। लोगों को समझाया बुझाया आखिरकार उसे छोड़ा करके ले आए। अपनी जिंदगी दांव पर लगा दी। यानी एक ऐसा व्यक्तित्व जिसने किताबें पढ़ी भी बहुत, किताबें लिखी भी बहुत और मैं समझता हूं कि अखबार चलाना, पत्रकारों से काम लेना ये तो शायद सरल रहेगा। समाज कारण वाली दुनिया, समाज कारण का अनुभव एक है राज कारण का अनुभव दूसरा है। एक सांसद के रूप में आपने एक सफल कार्यकाल का अनुभव सबको कराया है। लेकिन ज्यादातर सदन का हाल ये है कि यहाँ खिलाड़ियों से ज्यादा अम्पायर परेशान रहते हैं। इसलिए नियमों में खेलने के लिए सबको मजबूर करना- एक बहुत बड़ा काम है, चुनौतीपूर्ण काम है। लेकिन हरिवंश जी जरूर इस काम को पूरा करेंगे।

हरिवंश जी की श्रीमती जी आशा जी वो स्वयं चंपारण से हैं यानी एक प्रकार से पूरा परिवार वहीं जेपी से तो कभी गांधी से और वो भी एम.ए. पालिटिकल साइंस से हैं तो उनका academic नॉलेज अब ज्यादा आपको मदद करेगा। मुझे विश्वास है कि अब सदन का मंत्र बन जाएगा सभी हम सांसदों का- हरिकृपा। अब सब कुछ हरि भरोसे। और मुझे विश्वास है कि हम सभी, उधर हो या इधर हों सभी सांसदों पर हरि कृपा बने रहेगी। ये चुनाव ऐसा था जिसमें दोनों तरफ हरि थे। लेकिन एक के आगे बी के था। बीके हरि, इधर इनके पास कोई बीके वीके नहीं था। लेकिन मैं बी के हरिप्रसाद जी को भी लोकतंत्र की गरिमा के लिए अपने दायित्व को निभाते हुए... और सब कह रहे थे कि परिणाम पता है लेकिन प्रक्रिया करेंगे। तो काफी नए लोगों की ट्रेनिंग भी हो गई होगी- वोट डालने की।

मैं सदन के सभी महानुभव का, सभी आदरणीय सदस्यों का इस पूरी प्रक्रिया को बहुत उत्तम तरीके से आगे बढ़ाने के लिए और उपसभापति जी को, मुझे विश्वास है उनका अनुभव, उनका समाज कारण के लिए समर्पण ... हरिवंश जी की एक विशेषता थी उन्होंने एक कॉलम चलाई थी। अपने अखबार में कि "हमारा सांसद कैसा होना चाहिए"। तब तो उनको भी पता नहीं था कि वो एमपी बनेंगे। तो एमपी कैसा होना चाहिए इसकी बड़ी मुहिम चलाई थी। मैं जानता हूं कि उनके जो सपने थे उनको पूरा करने का बहुत बड़ा अवसर उनको मिला है कि हम सभी सांसदों को जो भी ट्रेनिंग आपके माध्यम से मिलेगी और जिस दशरथ मांझी जी चर्चा आज कभी-कभी हिन्दुस्तान में सुनाई देती है। बहुत कम लोगों को मालूम होगा उस दशरथ मांझी की कथा को ढूँढ़ ढाँढ़करके पहली बार किसी ने प्रकट किया था तो हरिवंश बाबू ने किया था कि यानी समाज के बिल्कुल नीचे के स्तर के लोगों के साथ जुड़े हुए महानुभव आज हम लोगों का मार्गदर्शन करने वाले हैं।

मेरी तरफ से उनको बहुत-बहुत बधाई, बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

\*\*\*

अतुल कुमार तिवारी/ हिमांशु सिंह/ममता



(रिलीज़ आईडी: 1542203) आगंतुक पटल : 423

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English , Marathi , Bengali , Assamese , Gujarati , Tamil

प्रधानमंत्री कार्यालय

# संसद के शीतकालीन सत्र के शुरुवात पर प्रधानमंत्री द्वारा मिडिया को दिए गये वक्तव्य का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 11 DEC 2018 11:18AM by PIB Delhi

नमस्कार साथियों, शीत सत्र में आप सबका भी स्वागत है। यह सत्र महत्वपूर्ण है। सरकार की तरफ से कई महत्वपूर्ण विषय, जो जनहित के हैं, देशहित के हैं और सभी का यह प्रयास रहे कि जितने अधिकतम काम हम जनहित का कर पाएं, लोकहित का कर पाएं, देशहित का कर पाएं। मुझे विश्वास है कि सदन के सभी सदस्य इस भावना का आदर करते हुए आगे बढ़ेंगे। हमारा निरंतर प्रयास रहा है कि सभी विषयों पर चर्चा हो। खुल करके चर्चा हो, तेज-तर्रार चर्चा हो, तीखी तमतमती चर्चा लेकिन चर्चा तो हो! वाद हो, विवाद हो, संवाद तो होना ही चाहिए और इसलिए हमारी यह गुजारिश रहेगी, हमारा आग्रह रहेगा कि यह सदन निर्धारित समय से भी अधिक समय काम करे। सारे महत्वपूर्ण विषयों को नतीजे तक पहुंचाये। चर्चा करके उसको और अधिक सार्थक बनाने के लिए और अधिक मजबूत बनाने के लिए प्रयास हो और मुझे विश्वास है कि सभी राजनीतिक दल जो मई महीने में कसौटी पर कसने वाले हैं, तो जरूर जनता जनार्दन का ध्यान रख करके इस सत्र का सर्वाधिक उपयोग जनहित के लिए करेंगे, दल हित के लिए नहीं करेंगे। इस विश्वास के साथ मेरी सबको बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

धन्यवाद!

\*\*\*\*

एकेटी/केपी/एसके

(रिलीज़ आईडी: 1555490) आगंतुक पटल : 357

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English , Marathi , Bengali , Gujarati , Tamil , Malayalam